CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/4/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. वायु की गुणवत्ता में सुधार के लिए तुरंत कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। प्राय: प्रदूषण बढ़ने के बाद ही हम कार्यवाही के लिए लालायित होते हैं, जबकि प्रदूषण बढ़ने से पहले ही हमें सक्रिय हो जाना चाहिए। मौसम और वायु प्रदूषण एक-दूसरे से जुड़े हैं। हवा की गति कम हो, तो प्रदूषक तत्त्व बढ़ जाते हैं और हवा की गति जब ज्यादा होती है, तो बेहद खराब-से-खराब हवा भी बेहतर होने लगती है। समय विशेष में किसी खास दिशा से हवा नमी, धूल या प्रदूषकों को साथ ला सकती है। कुछ वायु प्रदूषक जमीन की सतह के आसपास होते हैं और बहुत ऊँचाई तक पहुँचे प्रदूषक मौसम को भी प्रभावित करते हैं।

जमीन से उठी गैसें, रासायनिक कण वायुमंडल में पहुँचकर अनेक बार नुकसानदेह प्रदूषणकारी बन सकते हैं, यदि वे लंबे समय तक वायुमंडल में बने रहे। अत: यदि अभी प्रदूषण वायुमंडल में पहुँचना रुक भी जाए, तो भी मौजूदा प्रदूषण अगले कई सालों तक असरकारी रहेंगे। वायु प्रदूषण की एक सच्चाई यह भी है कि एक जगह का प्रदूषण दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच जाता है। हवा साफ हो, तो कहीं-से-कहीं पहुँचे, चिंता की बात नहीं। हवा यदि प्रदूषण का भार लिए हुए है, तो चिंता का कारण है। हवा को प्रदूषकों का भार न ढोना पड़े, इसके साझा प्रयास किए जाने चाहिए। इसके लिए नवाचारी टेक्नोलॉजी और पद्धतियों के अनुसंधान पर काम करना ही होगा।

जगह-जगह भवनों या अन्य ढाँचागत निर्माण से खुली जगह में जो कमी आ रही है, उससे स्थानीय स्तर पर वायु-प्रवाह में दिक्कत हो रही है। इससे भी प्रदूषण आसपास ही मँडराता रहता है। जीवाश्म ईंधन जलाने से या औद्योगिक प्रदूषणों से कार्बन, सल्फर या नाइट्रोजन के ऑक्साइड जब वायुमंडल में पहुँचे, तो जल और जल का जो भी प्रारूप होगा, वह हिमपात हो या ओस हो तेजाबी हो सकता है। निस्संदेह बरसात के बाद हवा तो साफ लगेगी लेकिन प्रदूषित जल से पेड़ों की जड़ें और उनको जमीन से मिलने वाले पोषक तत्त्व दुष्प्रभावित हो सकते हैं। तालाबों, नदियों के जलचर पीड़ित हो सकते हैं। कुछ प्रदूषक पत्तियों पर ऐसे बैठ जाएँ, जो पेड़ों के लिए हानिकारक हों।

बरसात की जरूरत अब खेती, जलाशयों के लिए ही नहीं, दमघोंटू धुंध के प्रदूषण से निजात पाने के लिए भी हो गई हैं। कृत्रिम बरसात का विकल्प भी कुछ जिम्मेदार संस्थाएँ देने लगी हैं। वायुमंडलीय प्रदूषण में सुधार हेतु हमें सावधान होने की जरूरत है। [10 अंक]

1(i). वायु की गुणवत्ता से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) वायु के प्रदूषक तत्त्व

(B) वायु की स्थिति

(C) वायु के बहने की गति

(D) वायु की शुद्धता

सही उत्तर: (D) वायु की शुद्धता

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार गद्यांश के आरंभ में वायु की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता बताई गई है। आगे प्रदूषक तत्त्वों को कम करने और हवा को साफ रखने की चर्चा है। इसलिए गुणवत्ता का अर्थ यहाँ हवा का शुद्ध होना है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) प्रदूषक तत्त्व गुणवत्ता को घटाने वाले पदार्थ हैं, स्वयं गुणवत्ता का अर्थ नहीं हैं। (B) स्थिति एक व्यापक और अस्पष्ट शब्द है। (C) बहने की गति प्रदूषण के फैलाव को प्रभावित करती है, पर शुद्धता का पर्याय नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : वायु की शुद्धता।

त्वरित सुझाव: वायु की गुणवत्ता का अर्थ तय करने के लिए आसपास आए साफ हवा और प्रदूषक तत्त्वों के संदर्भ को जोड़ें।

1(ii). 'प्रदूषण बढ़ने के बाद ही हम कार्यवाही के लिए लालायित होते हैं।' — पंक्ति मानवीय स्वभाव की किस विशेषता का उल्लेख करती है ? [1 अंक]

(A) प्रदूषण बढ़ने पर हम चिंतित होने लगते हैं।

(B) प्रदूषण बढ़ने से पहले ही हम कार्यवाही करने लगते हैं।

(C) समस्या सिर पर आने पर ही समाधान पर विचार करते हैं।

(D) समस्या आने से पहले ही समाधान पर विचार करते हैं।

सही उत्तर: (C) समस्या सिर पर आने पर ही समाधान पर विचार करते हैं।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पंक्ति में विशेष बल बढ़ने के बाद ही पर है। लेखक बताता है कि लोग खतरा बढ़ जाने पर कार्यवाही करने को उत्सुक होते हैं, जबकि उन्हें उससे पहले सक्रिय होना चाहिए। यह देर से जागने की प्रवृत्ति है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) केवल चिंतित होने की बात कहता है, जबकि पंक्ति कार्यवाही की देर से पैदा हुई इच्छा बताती है। (B) और (D) समस्या से पहले सक्रिय होने की बात कहते हैं, जो उद्धृत पंक्ति के विपरीत है। (C) में संकट आने पर समाधान सोचने का भाव ठीक व्यक्त हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : समस्या सिर पर आने पर ही समाधान पर विचार करना।

त्वरित सुझाव: मानवीय स्वभाव वाले प्रश्न में घटना के बजाय उसके पीछे छिपी सामान्य प्रवृत्ति पहचानें।

1(iii). हवा की गति का प्रदूषण पर क्या प्रभाव पड़ता है ? [1 अंक]

(A) हवा की गति बढ़ने पर प्रदूषण बढ़ने लगता है

(B) हवा की गति बढ़ने पर प्रदूषण घटने लगता है

(C) हवा की गति कम होने पर प्रदूषण कम होने लगता है

(D) हवा की गति सामान्य रहने पर प्रदूषण समाप्त हो जाता है

सही उत्तर: (B) हवा की गति बढ़ने पर प्रदूषण घटने लगता है

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार गद्यांश में स्पष्ट है कि हवा की गति कम होने पर प्रदूषक तत्त्व बढ़ जाते हैं। इसके विपरीत, हवा की गति ज्यादा होने पर बहुत खराब हवा भी बेहतर होने लगती है। तेज प्रवाह से एक स्थान पर जमा प्रदूषण कम होता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) बढ़ती गति के साथ प्रदूषण बढ़ने की बात कहता है और (C) कम गति के साथ प्रदूषण घटने की; दोनों कथन गद्यांश से उलटे हैं। (D) में प्रदूषण समाप्त होने का दावा है, जबकि गद्यांश केवल हवा बेहतर होने की बात करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : हवा की गति बढ़ने पर प्रदूषण घटने लगता है।

त्वरित सुझाव: हवा की गति के प्रश्न में कम गति और ज्यादा गति के दोनों वाक्यों को साथ पढ़कर संबंध जाँचें।

1(iv). हवा का एक जगह से दूसरी जगह पहुँचना चिंता का कारण कब बन जाता है ? [1 अंक]

(A) जब वह धीमी गति से बहे

(B) जब वह तीव्र गति से बहे

(C) जब उसमें प्रदूषक तत्त्वों की अधिकता हो

(D) जब उसमें धूल-मिट्टी की अधिकता हो

सही उत्तर: (C) जब उसमें प्रदूषक तत्त्वों की अधिकता हो

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार लेखक के अनुसार साफ हवा कहीं से कहीं पहुँचे तो चिंता नहीं होती। चिंता तब है जब हवा प्रदूषण का भार लेकर दूसरे क्षेत्रों में जाती है। इस प्रकार हवा के स्थान बदलने से अधिक महत्त्व उसके प्रदूषित होने का है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) और (B) केवल हवा की गति बताते हैं; ये उसके दूसरे स्थान तक पहुँचने से होने वाली चिंता का पूरा कारण नहीं हैं। (D) धूल-मिट्टी तक सीमित है। गद्यांश गैसों और रासायनिक कणों सहित सभी प्रदूषकों की चर्चा करता है, इसलिए (C) अधिक व्यापक और सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : जब उसमें प्रदूषक तत्त्वों की अधिकता हो।

त्वरित सुझाव: स्थान बदलती हवा के बारे में साफ हवा और प्रदूषण का भार लिए हवा के बीच लेखक का अंतर ध्यान में रखें।

1(ix). प्रस्तुत गद्यांश का वर्ण्य-विषय है : [1 अंक]

(A) दिनोंदिन बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण

(B) दिनोंदिन हवा में बढ़ता प्रदूषण

(C) कृत्रिम बरसात : आज की आवश्यकता

(D) पर्यावरण सुधार : समय की माँग

सही उत्तर: (B) दिनोंदिन हवा में बढ़ता प्रदूषण

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार पूरे गद्यांश में वायु की गुणवत्ता, हवा की गति, प्रदूषकों के फैलाव, निर्माण से वायु-प्रवाह की बाधा तथा प्रदूषित हवा के प्रभाव बताए गए हैं। अंतिम अनुच्छेद में बरसात भी वायु प्रदूषण से राहत के संदर्भ में आती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) सामान्य पर्यावरण प्रदूषण तक विषय को बहुत व्यापक करता है। (C) कृत्रिम बरसात को विषय मानता है, जबकि वह केवल एक प्रसंग है। (D) सुधार की माँग पर बल देता है, पर गद्यांश का मुख्य वर्ण्य-विषय हवा में बढ़ता प्रदूषण और उसके प्रभाव हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : दिनोंदिन हवा में बढ़ता प्रदूषण।

त्वरित सुझाव: वर्ण्य-विषय चुनते समय सभी अनुच्छेदों में बार-बार आने वाले केंद्रीय विषय को चुनें, केवल अंतिम उदाहरण को नहीं।

1(v). हवा में उपस्थित प्रदूषण को कम करने के विषय में क्या सत्य नहीं है ? [1 अंक]

(A) सरकार और जनता को साझा प्रयास करने होंगे।

(B) नवाचारी टेक्नोलॉजी और पद्धतियों पर काम करना होगा।

(C) धरती के बढ़ते तापमान को नियंत्रित रखना होगा।

(D) हवा में रासायनिक गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना होगा।

सही उत्तर: (C) धरती के बढ़ते तापमान को नियंत्रित रखना होगा।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार प्रश्न में सत्य नहीं पूछा गया है, इसलिए गद्यांश में बताए प्रदूषण-नियंत्रण के उपायों से अलग कथन चुनना है। लेखक साझा प्रयास, नवाचारी टेक्नोलॉजी और पद्धतियों के अनुसंधान की आवश्यकता बताता है तथा हानिकारक गैसों और कणों का उल्लेख करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) साझा प्रयास की बात से और (B) नवाचारी तकनीक के अनुसंधान से मेल खाता है। (D) प्रदूषक गैसों के वायुमंडल में पहुँचने को रोकने से संबद्ध है। (C) में तापमान नियंत्रित करने की बात है, जिसे गद्यांश में वायु प्रदूषण घटाने के उपाय के रूप में नहीं बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : धरती के बढ़ते तापमान को नियंत्रित रखना होगा।

त्वरित सुझाव: सत्य नहीं वाले प्रश्न में पहले निषेध को चिह्नित करें और हर विकल्प को गद्यांश में दिए उपायों से मिलाएँ।

1(vi). जगह-जगह भवनों के निर्माण से खुली जगह में कमी के साथ-साथ और क्या समस्या आ रही है ? [1 अंक]

(A) लोगों को ध्वनि-प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है।

(B) स्थानीय स्तर पर वायु-प्रवाह में प्रदूषण बढ़ रहा है।

(C) स्थानीय स्तर पर लोगों को आवाजाही में दिक्कत आ रही है।

(D) स्थानीय स्तर पर सूर्य के प्रकाश की दिक्कत आ रही है।

सही उत्तर: (B) स्थानीय स्तर पर वायु-प्रवाह में प्रदूषण बढ़ रहा है।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार गद्यांश बताता है कि भवनों और ढाँचागत निर्माण से खुली जगह घट रही है। इससे स्थानीय स्तर पर वायु-प्रवाह में दिक्कत आती है और प्रदूषण आसपास ही मँडराता रहता है। इसलिए निर्माण का बताया गया प्रभाव हवा के प्रवाह और प्रदूषण से जुड़ा है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) में ध्वनि-प्रदूषण, (C) में लोगों की आवाजाही और (D) में सूर्य के प्रकाश की कठिनाई है। इनमें से किसी का वर्णन इस प्रसंग में नहीं है। (B) की अभिव्यक्ति का आशय स्थानीय वायु-प्रवाह की बाधा से प्रदूषण के बढ़ने से है और यही गद्यांश से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : स्थानीय स्तर पर वायु-प्रवाह में प्रदूषण बढ़ रहा है।

त्वरित सुझाव: निर्माण का प्रभाव पूछे जाने पर खुली जगह की कमी से वायु-प्रवाह की बाधा और फिर प्रदूषण का जमाव जोड़ें।

1(vii). हवा में उपस्थित प्रदूषण को कम करने के लिए कृत्रिम बरसात प्रभावकारी तरीका क्यों नहीं है ? [1 अंक]

(A) इससे फ़सलों को नुकसान पहुँचेगा

(B) इससे वनस्पति, जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचेगा

(C) आर्थिक दृष्टि से महँगा सौदा है

(D) प्रदूषित हवा विश्व-व्यापी समस्या है

सही उत्तर: (B) इससे वनस्पति, जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचेगा

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार गद्यांश के अनुसार प्रदूषक ऑक्साइडों के कारण वर्षा का जल तेजाबी हो सकता है। बरसात के बाद हवा साफ दिख सकती है, लेकिन प्रदूषित जल पेड़ों की जड़ों और पोषक तत्त्वों को प्रभावित कर सकता है तथा तालाबों और नदियों के जलचर पीड़ित हो सकते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) वनस्पति और जीव-जंतुओं दोनों की हानि को समेटता है। (A) केवल फसलों तक सीमित है, जबकि गद्यांश में हानि का दायरा व्यापक है। (C) में आर्थिक लागत का कारण है, जिसका उल्लेख नहीं है। (D) समस्या के फैलाव को कहता है, पर बरसात से होने वाली बताई गई हानि का कारण नहीं बताता।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : इससे वनस्पति, जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचेगा।

त्वरित सुझाव: बरसात से हवा साफ होने के बाद लेकिन शब्द से शुरू होने वाली हानि पढ़ें; वही प्रश्न के निषेध का आधार है।

1(viii). वर्तमान समय में बेमौसम बरसात की जरूरत क्यों महसूस हो रही है ? [1 अंक]

(A) बढ़ते तापमान को कम करने के लिए

(B) पेड़-पौधों की सिंचाई करने के लिए

(C) पानी की कमी को दूर करने के लिए

(D) प्रदूषित हवा को शुद्ध करने के लिए

सही उत्तर: (D) प्रदूषित हवा को शुद्ध करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के प्रश्न का उत्तर उसके कथ्य और प्रसंग के आधार पर चुनना चाहिए।
- विकल्पों की तुलना करते समय शब्दार्थ, कारण और मुख्य विषय के बीच अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से निर्णायक आधार अंतिम अनुच्छेद में कहा गया है कि बरसात अब खेती और जलाशयों के लिए ही नहीं, दमघोंटू धुंध के प्रदूषण से निजात पाने के लिए भी चाहिए। इसके तुरंत बाद कृत्रिम बरसात का उल्लेख है। वर्तमान अतिरिक्त आवश्यकता प्रदूषित हवा से राहत पाना है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) में तापमान कम करना है, जो यहाँ नहीं कहा गया। (B) सिंचाई और (C) पानी की कमी से संबंधित पुराने सामान्य उपयोग हैं। प्रश्न वर्तमान प्रसंग में उभरी जरूरत पूछता है, इसलिए धुंध और वायु प्रदूषण कम करने वाला (D) सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : प्रदूषित हवा को शुद्ध करने के लिए।

त्वरित सुझाव: ही नहीं और भी के प्रयोग को पहचानें; इनके बाद बताया गया नया प्रयोजन वर्तमान जरूरत का उत्तर देता है।

1(x). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन *(A)* : जमीन से उठी कम घातक गैसें भी वायुमंडल में पहुँचकर नुकसानदेह प्रदूषणकारी बन जाती है।
कारण *(R)* : हवा की गति कम हो, तो प्रदूषक बढ़ जाते हैं। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।
(C) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(D) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।

सही उत्तर: (B) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन की सत्यता गद्यांश में दिए तथ्य से और कारण की संगति उसी तथ्य की व्याख्या से तय की जाती है।
- दो तथ्य सही होने पर भी उनके बीच कारण और परिणाम का संबंध होना आवश्यक नहीं है।

चरण 1: कथन की जाँच गद्यांश कहता है कि जमीन से उठी गैसें और रासायनिक कण वायुमंडल में लंबे समय तक बने रहने पर नुकसानदेह प्रदूषणकारी बन सकते हैं। इसी संदर्भ में कम घातक गैसों के हानिकारक हो जाने का कथन स्वीकार्य है। कथन (A) सही है।

चरण 2: कारण की जाँच गद्यांश में स्पष्ट है कि हवा की गति कम होने पर प्रदूषक तत्त्व बढ़ जाते हैं। वे आसानी से फैलकर दूर नहीं जा पाते। इसलिए कारण (R) भी सही है।

चरण 3: व्याख्या और विकल्पों का परीक्षण गैसों के नुकसानदेह बनने का संदर्भ उनका वायुमंडल में लंबे समय तक बना रहना है। हवा की धीमी गति प्रदूषकों की वृद्धि का अलग तथ्य है; वह कथन की सही व्याख्या नहीं करती। इसलिए विकल्प (A) का व्याख्यात्मक संबंध गलत है। कथन सही होने से (C) और दोनों तथ्य सही होने से (D) भी गलत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है। कथन सही है, लेकिन दिया गया कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

त्वरित सुझाव: कथन और कारण अलग-अलग सही जाँचने के बाद यह भी देखें कि कारण उसी घटना का उत्तर देता है या केवल संबंधित तथ्य है।

2(a). बढ़ी है इस बार गंगा खूब
दियारो पर गाँव कितने हो गए हैं डूब
किंतु हम तो शहर की इस छोर पर हैं
देखते हैं रात-दिन जल-प्रलय का ही दृश्य
पत्थरों से बँधी गहरी नींववाला
किराए का घर हमारा रहे यह आबाद
पुराना ही सही पर मजबूत
रही जिसको अनवरत झकझोर
क्षुब्ध गंगा की विकट हिलकोर
सामने ही पड़ोसी के —
नीम, सहजन, आँवला, अमरूद
हो रहे हैं आकंठ जल में मग्न
रह न पाए स्तंभ पुल के नग्न
दूधिया पानी बना उनका रजत परिधान
रेलगाड़ी के पसिंजर खड़े होकर
खिड़कियों से झाँकते हैं
देखते हैं बाढ़ का यह दृश्य
उधर झूँसी इधर दारागंज

बीच का विस्तार
बन गया है आज पारावार
भगवती भागीरथी
ग्रीष्म में यह हो गई थी प्रतनु-सलिला
विरहिणी की पीठ लुंठित एकवेणी-सदृश
जिसको देखते ही व्यथा से अवसन्न होते रहे मेरे नेत्र
रिक्त ही था वरुण की कल-केलि का यह क्षेत्र
काकु करती रही पुल की प्रतिच्छाया, मगर यह थी मौन
उस प्रतनुता से अरे इस बाढ़ की तुलना करेगा कौन ? [5 अंक]

2(a)(i). 'रह न पाए स्तंभ पुल के नग्न' पंक्ति के आधार पर पुल के स्तंभों के नग्न न रह पाने का कारण है : [1 अंक]

(A) गंगा नदी का तेज बहाव
(B) गंगा नदी का मटमैला पानी
(C) गंगा नदी का बढ़ा जल-स्तर
(D) गंगा नदी का रेतीला पानी

सही उत्तर: (C) गंगा नदी का बढ़ा जल-स्तर

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश के दृश्य-बिंब का अर्थ उसके आसपास की पंक्तियों से स्पष्ट होता है।
- पुल के स्तंभों का ढक जाना नदी में पानी की ऊँचाई बढ़ने का संकेत है।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग समझना कवि ने बाढ़ से डूबते गाँवों, जलमग्न पेड़ों और विस्तृत जलराशि का चित्र प्रस्तुत किया है। इसी क्रम में वह कहता है कि पुल के स्तंभ नग्न नहीं रह पाए। इसका अर्थ है कि जो भाग पहले खुले दिखाई देते थे, वे अब बढ़े हुए जल से ढक गए हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच विकल्प (C) में बढ़ा जल-स्तर इसी स्थिति का सीधा कारण बताता है। तेज बहाव वाला विकल्प (A) पानी की गति बताता है, स्तंभ ढकने की ऊँचाई नहीं। मटमैला और रेतीला पानी वाले (B) तथा (D) पानी के स्वरूप की बातें हैं; केवल रंग या रेत से स्तंभ जलमग्न नहीं होते। अगली पंक्ति का रजत परिधान भी जल के आवरण की पुष्टि करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : गंगा नदी का बढ़ा जल-स्तर।

त्वरित सुझाव: नग्न न रह पाने को खुले भाग के ढक जाने के अर्थ में पढ़ें; कारण पानी का रंग नहीं, उसकी बढ़ी हुई ऊँचाई है।

2(a)(ii). पुल के स्तंभों ने कैसा परिधान धारण किया हुआ है ? [1 अंक]

(A) गंगा-जल रूपी रजत परिधान

(B) चाँदी-सा चमकता परिधान

(C) मिट्टी-सा मटमैला परिधान

(D) दूध-सा चमकता परिधान

सही उत्तर: (A) गंगा-जल रूपी रजत परिधान

हल:

अवधारणा:

- काव्य में प्राकृतिक दृश्य को परिधान के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।
- सही विकल्प में उपमान के साथ उस वास्तविक वस्तु की पहचान भी होनी चाहिए जिसका वर्णन है।

चरण 1: पद्यांश का प्रमाण पहचानना कवि कहता है कि दूधिया पानी पुल के स्तंभों का रजत परिधान बन गया है। बाढ़ का पानी स्तंभों को चारों ओर से ढक रहा है; इसी आवरण को वस्त्र का रूप दिया गया है। यहाँ वास्तविक परिधान गंगा का जल है।

चरण 2: विकल्पों का अंतर समझना विकल्प (A) गंगा-जल रूपी रजत परिधान कहकर पानी और उसकी काव्यात्मक छवि दोनों बताता है। (B) केवल चाँदी जैसी चमक बताता है और वास्तविक जलरूपी आवरण स्पष्ट नहीं करता। (C) का मिट्टी-सा मटमैला स्वरूप पंक्ति के रजत बिंब से मेल नहीं खाता। (D) दूध-सा चमकता कहता है, जबकि प्रश्न में अपेक्षित परिधान का पूरा रूप गंगा-जल का रजत आवरण है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : गंगा-जल रूपी रजत परिधान।

त्वरित सुझाव: बिंब के प्रश्न में पूरी पंक्ति पढ़ें; यहाँ दूधिया पानी वस्तु है और रजत परिधान उसका कवि द्वारा दिया गया रूप है।

2(a)(iii). गाँव में बाढ़ आने पर भी कवि के संतोष का क्या कारण हो सकता है ? [1 अंक]

(A) घर का नदी से दूर होना

(B) घर का शहर के किनारे होना

(C) घर का पुराना होना

(D) घर का मजबूत होना

सही उत्तर: (D) घर का मजबूत होना

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के भाव का कारण पाठ में दिए उसके अनुभव और परिस्थितियों से पहचानना चाहिए।
- घर की स्थिति और उसकी मजबूती अलग बातें हैं; बाढ़ के खतरे में सुरक्षा का भरोसा मजबूती से मिलता है।

चरण 1: कवि के भरोसे का आधार खोजना कवि अपने किराए के घर के लिए पत्थरों से बँधी गहरी नींववाला और पुराना ही सही पर मजबूत कहता है। गंगा की विकट हिलकोरें उसे लगातार झकझोर रही हैं। ऐसे संकट में भी घर के टिके रहने का भरोसा उसकी मजबूत बनावट और गहरी नींव से जुड़ा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण विकल्प (D) इसी मजबूती को संतोष का कारण बताता है। (A) गलत है क्योंकि घर को नदी से दूर बताने का आधार नहीं है; लहरें उसे झकझोर रही हैं। (B) में शहर का किनारा स्थान बताता है, सुरक्षा की निर्णायक विशेषता नहीं। (C) में पुराना होना अपने आप में सुरक्षा नहीं देता; कवि पुरानेपन के बावजूद घर की मजबूती पर बल देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : घर का मजबूत होना।

त्वरित सुझाव: पुराना ही सही पर मजबूत में पर के बाद आई विशेषता पर ध्यान दें; कवि के भरोसे का आधार वही मजबूती है।

2(a)(iv). गंगा नदी की धारा ग्रीष्म-ऋतु में कैसी हो जाती है ? [1 अंक]

(A) मटमैली

(B) पतली

(C) सूखी

(D) काली

सही उत्तर: (B) पतली

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में नदी की दशा का उत्तर उसी ऋतु के वर्णन से लिया जाता है। ग्रीष्म का उल्लेख नदी में जल की कमी और धारा की आकृति समझने का संकेत है।
- उपमा में प्रयुक्त एकवेणी का बिंब पतली धारा को स्पष्ट करता है; इससे पानी का रंग या नदी का पूरी तरह सूख जाना सिद्ध नहीं होता।

चरण 1: प्रासंगिक पंक्ति पहचानें कवि गंगा को ग्रीष्म में पतली धारा वाली बताता है। "ग्रीष्म में यह हो गई थी प्रतनु-सलिला" के बाद "विरहिणी की पीठ लुंठित एकवेणी-सदृश" कहकर उसकी आकृति एक चोटी जैसी बताई गई है। चोटी का बिंब धारा के सँकरे और पतले होने को व्यक्त करता है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें विकल्प (B) का "पतली" शब्द इसी बिंब के अनुरूप है। (A) मटमैली जल के रंग की बात करता है, जबकि प्रश्न ग्रीष्म की धारा का है। (C) सूखी कहना अनुचित है, क्योंकि धारा विद्यमान है। (D) काली रंग का ऐसा संकेत है जो इस वर्णन का निष्कर्ष नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष ग्रीष्म-ऋतु में गंगा नदी की धारा पतली हो जाती है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: ग्रीष्म और एकवेणी के संकेत जोड़ें; चोटी जैसी आकृति से पतली धारा वाला विकल्प चुनें।

2(a)(v). 'विरहिणी की पीठ लुंठित एकवेणी-सदृश' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? [1 अंक]

(A) श्लेष

(B) उत्प्रेक्षा

(C) रूपक

(D) उपमा

सही उत्तर: (D) उपमा

हल:

अवधारणा:

- उपमा अलंकार में उपमेय की तुलना किसी उपमान से समान गुण के आधार पर की जाती है। सा, सी, समान और सदृश जैसे शब्द तुलना को स्पष्ट करते हैं।
- उपमेय वह वस्तु है जिसका वर्णन किया जा रहा है, जबकि उपमान वह परिचित वस्तु है जिससे उसकी तुलना होती है। यहाँ नदी की धारा और एकवेणी के बीच समानता दिखाई गई है।

चरण 1: उपमेय और उपमान पहचानें इस पंक्ति में गंगा की पतली धारा उपमेय है और विरहिणी की पीठ पर पड़ी एकवेणी उपमान है। "सदृश" शब्द दोनों के रूप की समानता बताता है। कवि ने नदी को सीधे वेणी घोषित करने के स्थान पर उसके समान बताया है।

चरण 2: अन्य अलंकारों से भेद करें अतः (D) उपमा उपयुक्त है। (A) श्लेष के लिए एक शब्द के अनेक अर्थों का प्रयोग आवश्यक होता है, जो यहाँ निर्णायक नहीं है। (B) उत्प्रेक्षा में संभावना का भाव रहता है; यहाँ स्पष्ट तुलना है। (C) रूपक में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप होता है, जबकि "सदृश" दोनों को अलग रखते हुए तुलना करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में "सदृश" द्वारा स्पष्ट तुलना होने से उपमा अलंकार है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: सदृश शब्द दिखे तो उपमेय और उपमान खोजें; स्पष्ट समानता होने पर उपमा की पुष्टि करें।

अथवा

2(b). अब कठोर हो वज्रादपि ओ कुसुमादपि सुकुमारी !
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।
मेरे लिए पिता ने सबसे धीर-वीर वर चाहा,
आर्यपुत्र को देख उन्होंने सभी प्रकार सराहा।
फिर भी हठकर हाय ! वृथा ही उन्होंने थाहा,
किस योद्धा ने बढ़कर उनका शौर्य-सिंधु अवगाहा ?
क्यों कर सिद्ध करूँ अपने को मैं उन नर की नारी
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।
देख कराल काल-सा जिसको काँप उठे सब भय से
गिरे प्रतिद्वंद्वी नंदार्जुन, नागदत्त जिस हय से
वह तुरंग पालित-कुरंग-सा नत हो गया विनय से,
क्यों न गूँजती रंगभूमि फिर उनके जय जय जय से
निकला वहाँ कौन उन जैसा प्रबल-पराक्रमकारी
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।
सभी सुंदरी बालाओं में मुझे उन्होंने माना,
सबने मेरा भाग्य सराहा, सबने रूप बखाना,
खेद, किसी ने उन्हें न फिर भी ठीक-ठीक पहचाना,
भेद चुने जाने का अपने मैंने भी अब जाना।
इस दिन के उपयुक्त पात्र की उन्हें खोज थी सारी,
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी। [5 अंक]

2(b)(i). नायिका के पिता द्वारा वर रूप में नायक का चयन उसके किन गुणों के आधार पर किया गया ? [1 अंक]

(A) धैर्य, शौर्य, बुद्धि और वीरता
(B) शारीरिक सौष्ठव और बाहुबल
(C) घुड़सवारी में कुशल होने की कला
(D) कोमल, मधुर और विनम्र स्वभाव

सही उत्तर: (A) धैर्य, शौर्य, बुद्धि और वीरता

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में किसी एक कौशल के बजाय नायक के समग्र गुण पूछे गए हैं।
- काव्यांश में पिता की इच्छा और नायक की परीक्षा से चयन का आधार मिलता है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानें 'मेरे लिए पिता ने सबसे धीर-वीर वर चाहा' से स्पष्ट है कि पिता धैर्यवान और वीर वर चाहते थे। आगे 'शौर्य-सिंधु' तथा 'प्रबल-पराक्रमकारी' जैसे पद नायक के शौर्य और वीरता की पुष्टि करते हैं। सभी प्रकार से प्रशंसा करना उसके समग्र

गुणों की स्वीकृति है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा देखें (B) केवल शरीर और बाहुबल तक सीमित है, जबकि पिता की इच्छा में धैर्य भी है। (C) घुड़सवारी परीक्षा का एक प्रसंग है, चयन का पूरा आधार नहीं। (D) कोमल और मधुर स्वभाव को पिता की प्रमुख अपेक्षा नहीं बताया गया। (A) ही धैर्य और वीरता सहित व्यापक गुणों को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष धैर्य, शौर्य, बुद्धि और वीरता। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: वर-चयन का कारण पूछे जाने पर पहले पिता की इच्छा वाली पंक्ति खोजें; किसी एक परीक्षा को पूरे चयन का आधार न मानें।

2(b)(ii). उपर्युक्त पंक्तियों में आर्यपुत्र द्वारा दी जाने वाली कौन-सी परीक्षा की बात कही गई है ? [1 अंक]

(A) स्वयं को सबसे शक्तिशाली सिद्ध करने की परीक्षा

(B) स्वयं को सबसे बुद्धिशाली सिद्ध करने की परीक्षा

(C) स्वयं को वर हेतु योग्य सिद्ध करने की परीक्षा

(D) स्वयं को सिंहासन हेतु योग्य सिद्ध करने की परीक्षा

सही उत्तर: (C) स्वयं को वर हेतु योग्य सिद्ध करने की परीक्षा

हल:

अवधारणा:

- परीक्षा का उद्देश्य उसके प्रसंग से तय होता है, केवल उसके साधन से नहीं।
- वर-चयन और विवाह के संदर्भ में वीरता का प्रदर्शन योग्यता की परीक्षा है।

चरण 1: वर-चयन का संदर्भ जोड़ें काव्यांश में नायिका कहती है कि उसके पिता ने धीर-वीर वर चाहा और आर्यपुत्र की प्रशंसा की। इसके बाद उनके शौर्य की परीक्षा का उल्लेख आता है। इसलिए आर्यपुत्र की परीक्षा का उद्देश्य नायिका के वर के रूप में अपनी योग्यता सिद्ध करना था।

चरण 2: साधन और उद्देश्य में अंतर करें भयावह अश्व को वश में करना शक्ति और साहस का प्रदर्शन है, पर (A) केवल शक्तिशाली होने को अंतिम उद्देश्य बना देता है। (B) में बुद्धिशाली होने की अलग परीक्षा का संकेत नहीं है। (D) सिंहासन की योग्यता से संबंधित है, जिसका यहाँ उल्लेख नहीं। (C) विवाह और वर-चयन के पूरे प्रसंग से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वयं को वर हेतु योग्य सिद्ध करने की परीक्षा। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: परीक्षा के स्वरूप और उसके उद्देश्य को अलग रखें; यहाँ वीरता का प्रदर्शन वर-योग्यता सिद्ध करने के लिए है।

2(b)(iii). 'इस दिन के उपयुक्त पात्र की उन्हें खोज थी सारी' — पंक्ति में प्रयुक्त 'उपयुक्त पात्र' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) उपयोगी बर्तन

(B) सुंदर राजकुमारी

(C) बलिष्ठ अश्व

(D) उपयुक्त व्यक्तित्व

सही उत्तर: (D) उपयुक्त व्यक्तित्व

हल:

अवधारणा:

- एक ही शब्द का अर्थ संदर्भ बदलने पर बदल सकता है।
- यहाँ पात्र का अर्थ किसी परिस्थिति के योग्य व्यक्ति है।

चरण 1: पंक्ति का संबंध पहचानें 'इस दिन के उपयुक्त पात्र की उन्हें खोज थी सारी' से पहले नायिका अपने चुने जाने का भेद समझने की बात कहती है। अतः यहाँ पात्र किसी वस्तु का नाम नहीं, बल्कि विशेष परिस्थिति के अनुकूल गुण रखने वाला व्यक्तित्व है। प्रसंग में बाहरी रूप से आगे बढ़कर योग्यता का बोध होता है।

चरण 2: विकल्पों को प्रसंग से परखें (A) उपयोगी बर्तन शब्द पात्र का सामान्य वस्तुगत अर्थ लेता है, जो यहाँ असंगत है। (B) सुंदर राजकुमारी केवल रूप और पद तक सीमित है; पंक्ति उपयुक्तता पर बल देती है। (C) बलिष्ठ अश्व पिछले परीक्षा-प्रसंग की वस्तु है, चुने जाने का पात्र नहीं। (D) उपयुक्त व्यक्तित्व संदर्भ और विशेषण दोनों से संगत है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त व्यक्तित्व। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पात्र का अर्थ तय करते समय उसके साथ आए उपयुक्त शब्द और नायिका के चुने जाने के संदर्भ को एक साथ पढ़ें।

2(b)(iv). 'देख कराल काल-सा जिसको काँप उठे सब भय से' — पंक्ति में 'जिसको' का प्रयोग किसके लिए किया गया है ? [1 अंक]

(A) प्रतिद्वंद्वी राजकुमार

(B) आर्यपुत्र

(C) तुरंग

(D) कुरंग

सही उत्तर: (C) तुरंग

हल:

अवधारणा:

- सर्वनाम का सही संदर्भ आसपास की पूरी वाक्य-शृंखला से मिलता है।
- हय और तुरंग दोनों घोड़े के पर्याय हैं; कुरंग का अर्थ हिरण है।

चरण 1: अगली पंक्तियों से संदर्भ जोड़ें 'जिसको' देखने से सबके काँपने का वर्णन है। आगे कहा गया है कि नंदार्जुन और नागदत्त जिस हय से गिरे, वही तुरंग विनय से झुक गया। इस निरंतर वर्णन में भय उत्पन्न करने वाला प्राणी अश्व है। हय और तुरंग एक ही प्राणी के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

चरण 2: भिन्न पात्रों को अलग करें (A) प्रतिद्वंद्वी राजकुमार उस घोड़े से गिरने वाले व्यक्ति हैं। (B) आर्यपुत्र उसे वश में करने वाले वीर हैं, यहाँ भयावह दिखने वाली वस्तु के सर्वनाम नहीं। (D) कुरंग उपमान है, जिससे वश में आए अश्व की तुलना हुई है। (C) तुरंग ही उस भयकारी घोड़े का नाम है।

चरण 3: निष्कर्ष तुरंग। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: जिसको का संकेत जानने के लिए अगले वाक्य में आए हय और तुरंग को जोड़ें; कुरंग केवल तुलना के लिए आया है।

2(b)(v). 'वह तुरंग पालित-कुरंग-सा नत हो गया विनय से' — काव्य-पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? [1 अंक]

(A) अतिशयोक्ति

(B) उपमा

(C) उत्प्रेक्षा

(D) मानवीकरण

सही उत्तर: (B) उपमा

हल:

अवधारणा:

- उपमा में दो भिन्न वस्तुओं की किसी समान गुण के आधार पर स्पष्ट तुलना होती है।
- सा, सी, से, समान जैसे शब्द उपमा के वाचक हो सकते हैं।

चरण 1: तुलना के घटक पहचानें 'वह तुरंग पालित-कुरंग-सा नत हो गया विनय से' में तुरंग अर्थात घोड़ा उपमेय और पालित कुरंग अर्थात पालतू हिरण उपमान है। दोनों के बीच विनम्र होकर झुकने और सहज वश में होने की समानता दिखाई गई है। 'सा' तुलना को स्पष्ट करने वाला वाचक शब्द है।

चरण 2: अन्य अलंकारों से अंतर करें (A) अतिशयोक्ति के लिए मुख्य रूप से असाधारण बढ़ा-चढ़ाकर कथन आवश्यक होता है; यहाँ प्रधान विशेषता स्पष्ट तुलना है। (C) उत्प्रेक्षा में संभावना या कल्पित आशंका का भाव होता है, जो यहाँ नहीं। (D) मानवीकरण में प्रकृति या जड़ वस्तु को मानवीय रूप दिया जाता है; यहाँ अश्व और हिरण की सीधी तुलना प्रमुख है। इसलिए (B) उपमा उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष उपमा। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सा शब्द देखकर दोनों पक्ष भी खोजें: यहाँ तुरंग और पालित कुरंग के बीच विनम्रता की स्पष्ट समानता उपमा सिद्ध करती है।

3(i). ऐसी प्राकृतिक ध्वनियाँ या आवाजें जो शूट करते समय ख़ुद-ब-ख़ुद चली आती हैं, कहलाती हैं : [1 अंक]

(A) नेट साउंड

(B) कलरव

(C) शोर

(D) कोलाहल

सही उत्तर: (A) नेट साउंड

हल:

अवधारणा:

- इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में शूटिंग के समय घटनास्थल से स्वाभाविक रूप में रिकॉर्ड होने वाली ध्वनियों को नेट साउंड कहा जाता है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें प्रश्न में निर्णायक शब्द हैं—शूट करते समय अपने आप आने वाली प्राकृतिक आवाजें। पक्षियों की चहचहाहट, लोगों की बातचीत या आसपास के यातायात की ध्वनि इस प्रकार रिकॉर्ड हो सकती है। इनका संबंध वास्तविक घटनास्थल से होता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) नेट साउंड इस तकनीकी परिभाषा से मेल खाता है। (B) कलरव विशेष प्रकार की चहल-पहल या पक्षियों की सामूहिक ध्वनि है। (C) शोर और (D) कोलाहल तेज या अव्यवस्थित आवाजों को बताते हैं; वे शूटिंग में स्वतः रिकॉर्ड होने वाली सभी प्राकृतिक ध्वनियों के तकनीकी नाम नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है—नेट साउंड।

त्वरित सुझाव: शूटिंग के साथ अपने आप रिकॉर्ड होने वाली आवाजों के लिए नेट साउंड शब्द याद रखें।

3(ii). भारत में इंटरनेट पत्रकारिता करने वाली पहली वेबसाइट है : [1 अंक]

(A) रीडिफ डॉटकॉम

(B) सीफी

(C) इंडिया इंफोलाइन

(D) तहलका डॉटकॉम

सही उत्तर: (A) रीडिफ डॉटकॉम

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न भारत में इंटरनेट पत्रकारिता की आरंभिक वेबसाइट के संबंध में पाठ्यपुस्तक के तथ्य की पहचान करता है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें अभिव्यक्ति और माध्यम में भारत की इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत के संदर्भ में रीडिफ डॉटकॉम का उल्लेख मिलता है। इसलिए उत्तर चुनते समय किसी वेबसाइट की आज की लोकप्रियता के स्थान पर पत्रकारिता के इतिहास में उसकी आरंभिक भूमिका पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) रीडिफ डॉटकॉम अपेक्षित ऐतिहासिक नाम है। (B) सीफी और (C) इंडिया इंफोलाइन इंटरनेट से जुड़ी वेबसाइटें हैं, पर इस प्रश्न में पूछे गए प्रथम स्थान का उत्तर नहीं हैं। (D) तहलका डॉटकॉम की पहचान खोजी पत्रकारिता से है; इस विशिष्ट पहचान को पहली इंटरनेट पत्रकारिता वेबसाइट होने से नहीं मिलाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है—रीडिफ डॉटकॉम।

त्वरित सुझाव: पहली वेबसाइट पूछे जाने पर रीडिफ तथा खोजी पत्रकारिता पूछे जाने पर तहलका का अंतर रखें।

3(iii). रेडियो में महत्त्व है : [1 अंक]

(A) प्रसारणकर्ताओं का

(B) शब्दों और ध्वनियों का

(C) छपे हुए शब्दों का

(D) दृश्यों और तस्वीरों का

सही उत्तर: (B) शब्दों और ध्वनियों का

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य जनसंचार माध्यम है; उसमें संदेश सुनकर ग्रहण किया जाता है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें रेडियो का श्रोता समाचार या कार्यक्रम को अपनी आँखों से नहीं देखता। अर्थ स्पष्ट करने के लिए बोले गए शब्द, आवाज का उतार-चढ़ाव और अन्य ध्वनियाँ काम करती हैं। इसीलिए रेडियो लेखन में ऐसी सरल और स्पष्ट भाषा उपयोगी होती है जिसे सुनते ही समझा जा सके।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (B) शब्दों और ध्वनियों का विकल्प रेडियो की श्रव्य प्रकृति को व्यक्त करता है। (A) प्रसारणकर्ता कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं, पर प्रश्न माध्यम के संप्रेषण के आधार का है। (C) छपे शब्द मुद्रित माध्यम से संबंधित हैं और (D) दृश्य तथा तस्वीरें दृश्य माध्यम से; रेडियो में श्रोता इन्हें देख नहीं सकता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B) है—शब्दों और ध्वनियों का।

त्वरित सुझाव: रेडियो के प्रश्न में सुनने की क्रिया को आधार बनाएँ और दृश्य या छपाई वाले विकल्प हटाएँ।

3(iv). संवाददाताओं की रुचियों और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया गया कार्य-विभाजन मीडिया की भाषा में क्या कहलाता है ?

[1 अंक]

(A) डेड लाइन

(B) एंकर बाइट

(C) बीट

(D) डेस्क

सही उत्तर: (C) बीट

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में किसी संवाददाता को सौंपे गए विशिष्ट विषय या क्षेत्र को उसकी बीट कहते हैं।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें समाचार संस्थान संवाददाताओं की जानकारी और रुचियों के अनुसार काम बाँटते हैं। उदाहरण के लिए किसी को राजनीति तथा किसी को खेल संबंधी समाचारों की जिम्मेदारी दी जा सकती है। इस तरह का विषयगत कार्य-विभाजन प्रश्न का मुख्य संकेत है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (C) बीट इसी निश्चित विषयक्षेत्र की जिम्मेदारी को व्यक्त करता है। (A) डेड लाइन काम पूरा करने की अंतिम समय-सीमा है। (B) एंकर बाइट का संबंध समाचार की प्रस्तुति या कथन से है, कार्य-विभाजन से नहीं। (D) डेस्क संपादकीय काम सँभालने वाली व्यवस्था है; संवाददाता के विशिष्ट विषयक्षेत्र का नाम बीट है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है—बीट।

त्वरित सुझाव: रुचि और ज्ञान के अनुसार संवाददाता को मिला विषयक्षेत्र देखते ही बीट शब्द पहचानें।

3(v). उलटा पिरामिड शैली का विकास कब हुआ ?

[1 अंक]

(A) अमेरिका में गृह-युद्ध के दौरान

(B) प्रथम विश्व युद्ध के दौरान

(C) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान

(D) इंग्लैंड के गृह-युद्ध के दौरान

सही उत्तर: (A) अमेरिका में गृह-युद्ध के दौरान

हल:

अवधारणा:

- उलटा पिरामिड समाचार लेखन की शैली है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण सूचना पहले दी जाती है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें इस शैली का ऐतिहासिक विकास अमेरिका के गृह-युद्ध के दौरान माना जाता है। इसमें समाचार का मुख्य तथ्य आरंभ में और अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण विवरण बाद में आते हैं। इस क्रम को पहचानना शैली का अर्थ और उसके इतिहास को साथ याद रखने में मदद करता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) अमेरिका में गृह-युद्ध के दौरान सही ऐतिहासिक संदर्भ है। (B) प्रथम विश्व युद्ध और (C) द्वितीय विश्व युद्ध बाद की घटनाएँ हैं; ये इस शैली के आरंभ का अपेक्षित संदर्भ नहीं हैं। (D) इंग्लैंड के गृह-युद्ध का विकल्प देश बदल देता है, इसलिए केवल गृह-युद्ध शब्द देखकर उसे सही नहीं चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है—अमेरिका में गृह-युद्ध के दौरान।

त्वरित सुझाव: उलटा पिरामिड का संबंध अमेरिका के गृह-युद्ध और सबसे जरूरी सूचना पहले देने से जोड़ें।

4. छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष [5 अंक]

4(i). छोटा खेत किसका प्रतीक है ? [1 अंक]

(A) फ़सल रोपे जाने वाले खेत का
(B) आकार में छोटे खेत का
(C) कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है
(D) कागज के उस पन्ने को जो पुस्तक में जिल्द-बद्ध रहता है

सही उत्तर: (C) कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है

हल:

अवधारणा:

- कविता में खेत के रूपक से कागज पर काव्य-रचना की प्रक्रिया समझाई गई है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें कवि ने आरंभ में ही छोटे चौकोने खेत को कागज का एक पन्ना कहा है। आगे शब्दों के अंकुर फूटने का उल्लेख स्पष्ट करता है कि इस पन्ने पर रचना आकार लेती है। इसलिए खेत का अर्थ यहाँ वास्तविक कृषि-भूमि नहीं, रचना का आधार बनने वाला पन्ना है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (C) रचना शब्द-बद्ध होने वाला कागज का पन्ना सही है। (A) फसल रोपने वाला खेत और (B) छोटे आकार वाला खेत रूपक के केवल बाहरी अर्थ तक सीमित हैं। (D) पुस्तक में जिल्द-बद्ध पन्ना केवल भौतिक स्थिति बताता है; उसमें कविता की सृजन-प्रक्रिया का निर्णायक संकेत नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है—कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है।

त्वरित सुझाव: छोटा खेत और कागज का एक पन्ना साथ पढ़ें; फिर शब्दों के अंकुर से रचना का संकेत पहचानें।

4(ii). 'अंधड़' से कवि का क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) हवा का तीव्र वेग

(B) शीतल-मंद-सुगंधित तेज हवा

(C) भावनाओं और विचारों का वेग

(D) धूल और मिट्टी से भरी तेज हवा

सही उत्तर: (C) भावनाओं और विचारों का वेग

हल:

अवधारणा:

- काव्य-रूपक में प्राकृतिक घटना कवि के भीतर की सृजनात्मक हलचल का प्रतीक बनती है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें अंधड़ आने के साथ ही क्षण का बीज बोया जाता है। इसके बाद कल्पना और शब्दों के अंकुरों का उल्लेख है। इस क्रम से स्पष्ट है कि अंधड़ कवि के मन में अचानक उठे भावनाओं और विचारों के तीव्र प्रवाह का संकेत है, जो रचना की प्रेरणा बनता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (C) भावनाओं और विचारों का वेग पूरे काव्य-संदर्भ से मेल खाता है। (A) हवा का तीव्र वेग और (D) धूल-मिट्टी वाली हवा अंधड़ के शाब्दिक अर्थ हैं। (B) शीतल-मंद-सुगंधित हवा भी यहाँ अभिप्रेत नहीं है। कविता में आगे कल्पना और शब्द आते हैं, इसलिए मौसम के वर्णन वाले तीनों विकल्प उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है—भावनाओं और विचारों का वेग।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ निकालते समय अंधड़ के बाद आए कल्पना और शब्द जैसे रचना-संबंधी संकेत पढ़ें।

4(iii). कविता के संदर्भ में बताइए कि बीज किसके संसर्ग से अंकुरित हुआ। [1 अंक]

(A) खाद-पानी

(B) सूर्य का प्रकाश

(C) कल्पना

(D) मिट्टी-पानी

सही उत्तर: (C) कल्पना

हल:

अवधारणा:

- कविता में अनुभूति का बीज कल्पना के संसर्ग से शब्दमय रचना में विकसित होता है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें दिए गए अंश में सीधे कहा गया है कि बीज ने कल्पना के रसायनों को पिया। इसी प्रक्रिया के बाद बीज का मूल रूप समाप्त होता है और शब्दों के अंकुर फूटते हैं। इसलिए बीज को अंकुरित करने वाली शक्ति का उत्तर स्वयं काव्यांश की इस पंक्ति से मिलता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (C) कल्पना सही है क्योंकि उसका नाम स्पष्ट रूप से दिया गया है। (A) खाद-पानी, (B) सूर्य का प्रकाश और (D) मिट्टी-पानी वास्तविक खेती में उपयोगी हो सकते हैं, लेकिन यहाँ रचना-प्रक्रिया का रूपक है। इन तीनों का उल्लेख बीज को अंकुरित करने वाले तत्व के रूप में अंश में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C) है—कल्पना।

त्वरित सुझाव: बीज ने क्या पिया—इसका उत्तर कल्पना के रसायनों वाली पंक्ति में खोजें।

4(iv). बीज के गल जाने पर क्या हुआ ? [1 अंक]

(A) शब्दों के अंकुर फूटे

(B) कवि को पश्चात्ताप हुआ

(C) भावनाओं के अंकुर फूटे

(D) कवि की मेहनत व्यर्थ हुई

सही उत्तर: (A) शब्दों के अंकुर फूटे

हल:

अवधारणा:

- रचना के रूपक में बीज का गलना अनुभूति का शब्दों में रूपांतरित होना है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के विशिष्ट संकेत और दिए गए विकल्पों के अर्थ का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पहचानें काव्यांश में बीज के पूरी तरह गल जाने के तुरंत बाद शब्द के अंकुर फूटने की बात आती है। अर्थात मूल अनुभूति कल्पना के माध्यम से काव्य-भाषा में विकसित होती है। इसके बाद पल्लव-पुष्पों का उल्लेख रचना के और समृद्ध होने की दिशा दिखाता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) शब्दों के अंकुर फूटे, अंश में व्यक्त परिणाम है। (B) कवि को पश्चात्ताप होने और (D) मेहनत व्यर्थ होने की बात कहीं नहीं है; इसके विपरीत रचना विकसित होती है। (C) भावनाओं के अंकुर सुनने में निकट लगता है, किंतु प्रश्न का उत्तर काव्यांश के ठीक शब्दों से देना है, जहाँ शब्द के अंकुर आए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) है—शब्दों के अंकुर फूटे।

त्वरित सुझाव: बीज गलने के ठीक बाद की पंक्ति पढ़ें और शब्द के अंकुर को भावनाओं के अंकुर से अलग रखें।

4(v). खेती के रूपक द्वारा कवि ने प्रस्तुत किया है : [1 अंक]

(A) कृषि-कर्म प्रक्रिया को

(B) काव्य-रचना प्रक्रिया को

(C) खेती में आने वाली कठिनाइयों को

(D) खेती के महत्त्व को

सही उत्तर: (B) काव्य-रचना प्रक्रिया को

हल:

अवधारणा:

- खेती का रूपक काव्य-रचना की प्रक्रिया को मूर्त बनाता है। कागज खेत है और भाव का क्षण बीज है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया प्रसंग और विकल्पों के बीच अर्थ का सटीक अंतर है।

चरण 1: प्रतीकों का संबंध पहचानें कवि ने कागज के पन्ने को चौकोना खेत कहा है। भावनात्मक प्रेरणा का बीज कल्पना के रसायनों से पोषण पाकर शब्दों के अंकुर और पल्लव-पुष्प बनता है। इस प्रकार अनुभव से शब्दमय कविता बनने की क्रमिक प्रक्रिया व्यक्त हुई है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को जाँचें विकल्प (A) केवल वास्तविक कृषि-कर्म तक सीमित है, जबकि यहाँ कागज और शब्द उपस्थित हैं। (C) में खेती की कठिनाइयाँ और (D) में खेती का महत्त्व है; दोनों कविता के केंद्रीय सृजनात्मक आशय को व्यक्त नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने खेती के रूपक द्वारा काव्य-रचना प्रक्रिया प्रस्तुत की है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ तय करते समय खेत के साथ आए कागज, कल्पना और शब्द जैसे संकेतों को जोड़ें।

5. अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। [5 अंक]

5(i). बुवाई का क्या अर्थ है ? [1 अंक]

(A) खेतों में बीज बोना

(B) खेतों में पानी देना

(C) खेतों में कटाई करना

(D) खेतों में खाद देना

सही उत्तर: (A) खेतों में बीज बोना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसी शब्द का अर्थ उसके ठीक पहले या बाद दिए गए स्पष्टीकरण से निर्धारित होता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया प्रसंग और विकल्पों के बीच अर्थ का सटीक अंतर है।

चरण 1: गद्यांश का स्पष्ट संकेत पढ़ें गद्यांश में किसान अपने पास का अच्छा गेहूँ लेकर जमीन में क्यारियाँ बनाकर डालता है। इसके तुरंत बाद कहा गया है कि उसे बुवाई कहते हैं। इसलिए यहाँ बुवाई का अर्थ खेतों में बीज बोना है।

चरण 2: अन्य कृषि-क्रियाओं से अंतर करें विकल्प (B) खेतों में पानी देने अर्थात सिंचाई को बताता है। (C) तैयार फसल की कटाई है और (D) खाद डालना है। ये खेती के अलग काम हैं; गद्यांश में बताई गई बीज डालने की क्रिया का नाम इनमें से कोई नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बुवाई का अर्थ खेतों में बीज बोना है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: शब्दार्थ के प्रश्न में गद्यांश का परिभाषा देने वाला वाक्य खोजकर उसी क्रिया से विकल्प मिलाएँ।

5(ii). बादलों की फ़सल पाने के लिए क्या करना पड़ता है ? [1 अंक]

(A) बादलों की पूजा-अर्चना करनी पड़ती है

(B) इंद्र देवता की पूजा-अर्चना करनी पड़ती है

(C) पानी का दान-पुण्य करना पड़ता है

(D) पानी की बरबादी को रोकना होता है

सही उत्तर: (C) पानी का दान-पुण्य करना पड़ता है

हल:

अवधारणा:

- जीजी पानी देने की क्रिया को बीज बोने के समान मानती हैं; इस कथन में पहले देने और फिर पाने का विश्वास व्यक्त है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया प्रसंग और विकल्पों के बीच अर्थ का सटीक अंतर है।

चरण 1: बादलों की फसल का संदर्भ समझें गद्यांश में घर का पानी देने को बुवाई कहा गया है। जीजी का तर्क है कि यह पानी बीज बनकर दिया जाएगा, तब सारे नगर और गाँव को वर्षा मिलेगी। अतः बादलों की फसल पाने का संबंध पानी के दान से है।

चरण 2: शेष विकल्पों को परखें विकल्प (A) और (B) पूजा-अर्चना की बात करते हैं, जबकि दिए गए अंश में आवश्यक कार्य के रूप में पानी देना बताया गया है। (D) पानी की बरबादी रोकने का विचार है, पर जीजी के इस विशेष तर्क का प्रत्यक्ष आशय वह नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बादलों की फसल पाने के लिए पानी का दान-पुण्य करना पड़ता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: उत्तर जीजी के कथन के अनुसार दें; सामान्य जल-संरक्षण का विचार इस प्रसंग के उत्तर पर हावी न होने दें।

5(iii). ऋषि-मुनियों के अनुसार हमें मनवांछित फल की प्राप्ति कब होती है ? [1 अंक]

(A) दिन-रात परिश्रम करने से
(B) ईश्वर की उपासना करने से
(C) बड़ों के आशीर्वाद से
(D) दान-पुण्य करने से

सही उत्तर: (D) दान-पुण्य करने से

हल:

अवधारणा:

- ऋषि-मुनियों का कथन पहले स्वयं देने और उसके बाद कई गुना फल मिलने के विश्वास पर आधारित है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया प्रसंग और विकल्पों के बीच अर्थ का सटीक अंतर है।

चरण 1: कथन का निर्णायक अंश पहचानें गद्यांश में ऋषि-मुनियों के हवाले से कहा गया है कि पहले खुद दो, तब देवता चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। इसलिए मनवांछित फल पाने की बताई गई शर्त दान देना है; फल प्राप्ति को परोपकारी आचरण से जोड़ा गया है।

चरण 2: विकल्पों का संदर्भ से मिलान करें विकल्प (A) परिश्रम, (B) उपासना और (C) बड़ों के आशीर्वाद से संबंधित हैं। जीवन में इनका महत्त्व हो सकता है, किंतु इस अंश में ऋषि-मुनियों के कथन का आधार इनमें से कोई नहीं है। यहाँ पहले देने की बात सीधे कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष ऋषि-मुनियों के अनुसार दान-पुण्य करने से मनवांछित फल मिलता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले खुद देने और बाद में अधिक पाने के संबंध को पहचानें; उत्तर सामान्य मान्यता से नहीं, दिए कथन से निकालें।

5(iv). जीजी ने किसान का उदाहरण क्यों दिया है ? [1 अंक]

(A) बुवाई की प्रक्रिया स्पष्ट करने के लिए
(B) भारतीय संस्कृति की महिमा बताने के लिए
(C) किसानों की महत्ता समझाने के लिए
(D) दान-पुण्य की महत्ता समझाने के लिए

सही उत्तर: (D) दान-पुण्य की महत्ता समझाने के लिए

हल:

अवधारणा:

- किसान का उदाहरण उपमा के रूप में तर्क स्पष्ट करता है: थोड़े बीज देने पर बड़ी फसल मिलती है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया प्रसंग और विकल्पों के बीच अर्थ का सटीक अंतर है।

चरण 1: उदाहरण और मुख्य बात का संबंध जोड़ें किसान अपने पास का थोड़ा अच्छा गेहूँ मिट्टी में डालकर बहुत अधिक गेहूँ प्राप्त करता है। इसी तरह जीजी अपने घर का पानी देने को वर्षा की बुवाई मानती हैं। उदाहरण का उद्देश्य यह समझाना है कि पहले त्याग या दान करने पर अधिक फल मिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा पहचानें विकल्प (A) उदाहरण की सतही कृषि-क्रिया बताता है, मुख्य उद्देश्य नहीं। (B) भारतीय संस्कृति का व्यापक उल्लेख है, पर इस तर्क का सटीक लक्ष्य नहीं है। (C) किसानों की महत्ता पर केंद्रित है, जबकि किसान के उदाहरण से दान का मूल्य समझाया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी ने दान-पुण्य की महत्ता समझाने के लिए किसान का उदाहरण दिया है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: उदाहरण का उद्देश्य पूछे जाने पर उसके विवरण से आगे बढ़कर देखें कि उससे कौन-सा मुख्य तर्क सिद्ध हुआ है।

5(v). 'पानी गली में बोएँगे' का अभिप्राय है : [1 अंक]

(A) पानी की गली में बुवाई करना

(B) पानी की खेतों में बुवाई करना

(C) पानी को गली में फेंकना

(D) पानी को इंद्र सेना पर डालना

सही उत्तर: (D) पानी को इंद्र सेना पर डालना

हल:

अवधारणा:

- आलंकारिक कथन का अभिप्राय पूरे प्रसंग में वर्णित वास्तविक क्रिया से स्पष्ट होता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया प्रसंग और विकल्पों के बीच अर्थ का सटीक अंतर है।

चरण 1: पानी बोने की वास्तविक क्रिया पहचानें गद्यांश में कहा गया है कि घर का पानी इन पर फेंकना भी बुवाई है। काले मेघा पानी दे के प्रसंग में यह इंद्र सेना पर पानी डालने की क्रिया है। जीजी इसी पानी देने को बीज देने और उसके बदले वर्षा पाने से जोड़ती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर स्पष्ट करें विकल्प (A) और (B) पानी की सचमुच बुवाई का अर्थ निकालते हैं, जो रूपक को शाब्दिक बना देता है। (C) केवल पानी गली में फेंकना कहकर उस दल को छोड़ देता है जिस पर पानी डाला जाता है। प्रसंग का पूरा और सटीक आशय (D) में है।

चरण 3: निष्कर्ष पानी गली में बोएँगे का अभिप्राय पानी को इंद्र सेना पर डालना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: रूपक के शाब्दिक अर्थ की जगह उससे संकेतित क्रिया और उस क्रिया के पात्र को पहचानकर उत्तर चुनें।

6(i). 'सिंधु घाटी सभ्यता की संपन्नता के विषय में कम बात होना' इसके कारणों के विषय में कौन-सा कथन सत्य नहीं है ? [1 अंक]

(A) सिंधु घाटी सभ्यता में भव्यता का आडंबर न होना

(B) इसका पिछली सदी में ही उद्घाटित होना

(C) इसकी लिपि का रहस्य समझ में न आना

(D) पाश्चात्य सभ्यता को अधिक महत्त्व दिया जाना

सही उत्तर: (D) पाश्चात्य सभ्यता को अधिक महत्त्व दिया जाना

हल:

अवधारणा:

- निषेधात्मक प्रश्न में वह कथन चुनना है जो पाठ में बताई गई कारण-श्रृंखला का हिस्सा नहीं है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया प्रसंग और विकल्पों के बीच अर्थ का सटीक अंतर है।

चरण 1: पाठ में दिए कारण याद करें सिंधु घाटी सभ्यता की संपन्नता में भव्यता का आडंबर नहीं है। उसका पिछली सदी में उद्घाटित होना और लिपि का रहस्य अब तक न खुल पाना भी उसके विषय में कम चर्चा होने के कारण हैं। ये बातें उसके इतिहास और विशेष स्वरूप से संबंधित हैं।

चरण 2: असंगत कारण अलग करें इसलिए विकल्प (A), (B) और (C) पाठानुसार कारण हैं और निषेधात्मक प्रश्न के उत्तर नहीं हो सकते। पाश्चात्य सभ्यता को अधिक महत्त्व दिए जाने को इस प्रसंग में लेखक ने कारण नहीं बताया है। इस कारण विकल्प (D) ही प्रश्न की माँग पूरी करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पाश्चात्य सभ्यता को अधिक महत्त्व दिया जाना वाला कथन सत्य नहीं है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में नहीं शब्द को रेखांकित मानकर तीन समर्थित कारण हटाएँ और पाठ में अनुपस्थित कारण चुनें।

6(ii). पाठशाला के प्रति आनंदा के विश्वास बढ़ने का श्रेय जाता है : [1 अंक]

(A) वसंत पाटिल को

(B) मास्टरों के व्यवहार को

(C) न.वा. सौंदलगेकर जी को

(D) (a) और (b) दोनों

सही उत्तर: (D) (a) और (b) दोनों

हल:

अवधारणा:

- जूझ में आनंदा का विद्यालय के प्रति भरोसा सहपाठी के सहयोग और शिक्षकों के व्यवहार से बढ़ता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिया गया प्रसंग और विकल्पों के बीच अर्थ का सटीक अंतर है।

चरण 1: विद्यालय में हुए सकारात्मक अनुभव पहचानें वसंत पाटिल के अध्ययनशील स्वभाव और सहयोग से आनंदा को पढ़ने का ढंग तथा प्रोत्साहन मिलता है। शिक्षकों के अनुकूल व्यवहार और पढ़ाई में उसकी प्रगति से उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। इस प्रकार विद्यालय उसके लिए भय के स्थान से सीखने के अवसर में बदलता है।

चरण 2: विकल्पों का पूरा आशय जाँचें विकल्प (A) केवल वसंत पाटिल और (B) केवल मास्टरों के व्यवहार को लेता है, इसलिए दोनों अपने-अपने स्तर पर अपूर्ण हैं। (C) के सौंदलगेकर जी मुख्यतः काव्य-रुचि और काव्य-सृजन की प्रेरणा से जुड़े हैं। विद्यालय के प्रति भरोसे के लिए (A) और (B) का संयुक्त विकल्प उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष पाठशाला के प्रति आनंदा का विश्वास बढ़ने का श्रेय वसंत पाटिल और मास्टरों के व्यवहार दोनों को है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: जूझ के प्रश्नों में विद्यालय का भरोसा, पढ़ाई का सहयोग और कविता की प्रेरणा—इन प्रसंगों को अलग पहचानें।

6(iii). 'ज्यादा पेंशन नहीं खा सका बेचारा' 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में किशनदा के लिए प्रयुक्त इस वाक्यांश का अभिप्राय है : [1 अंक]

(A) किशनदा की पेंशन-रकम कम थी

(B) किशनदा लंबी आयु तक नहीं जी सका

(C) किशनदा को मरते दम तक पेंशन नहीं मिली

(D) किशनदा की पेंशन गाँव वालों ने हड़प ली

सही उत्तर: (B) किशनदा लंबी आयु तक नहीं जी सका

हल:

अवधारणा:

- मुहावरेदार अभिव्यक्ति का प्रसंगानुसार अर्थ समझना आवश्यक है।
- पेंशन नौकरी से अवकाश पाने के बाद मिलने वाली नियमित राशि है। यहाँ उसे अधिक समय तक न खा सकने का संबंध जीवन की अवधि से है।

चरण 1: वाक्यांश का आशय किशनदा सेवा से निवृत्त होने के बाद अधिक समय तक जीवित नहीं रहे। इसलिए वे लंबे समय तक पेंशन का उपयोग नहीं कर सके। 'ज्यादा पेंशन नहीं खा सका बेचारा' में उनकी मृत्यु के प्रति करुणा व्यक्त हुई है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) राशि कम होने की बात करता है, जबकि यहाँ अवधि महत्त्वपूर्ण है। (C) पेंशन कभी न मिलने और (D) गाँव वालों द्वारा हड़पने का दावा करते हैं; इस वाक्यांश में इनमें से किसी घटना का संकेत नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष किशनदा लंबी आयु तक नहीं जी सके। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: 'पेंशन खाना' जैसे प्रयोगों में शब्दों का शाब्दिक अर्थ लेने से पहले प्रसंग में समय और भाव पहचानें।

6(iv). किशनदा के आदर्शों पर चलने से यशोधर बाबू के पारिवारिक, जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ? [1 अंक]

(A) उनका पारिवारिक जीवन अत्यंत सरल हो गया

(B) उनका परिवार आदर्शवादी परिवार बन गया

(C) उनका परिवार सिद्धांतवादी परिवार बन गया

(D) उनका अपने परिवार से मतभेद रहने लगा

सही उत्तर: (D) उनका अपने परिवार से मतभेद रहने लगा

हल:

अवधारणा:

- पात्रों के जीवनमूल्यों और पारिवारिक संबंधों का परस्पर प्रभाव पहचानना इस प्रश्न का आधार है।
- यशोधर बाबू किशनदा की सादगी और पुराने आदर्शों से प्रभावित हैं; उनका परिवार आधुनिक जीवनशैली की ओर बढ़ता है।

चरण 1: आदर्श और व्यवहार का अंतर यशोधर बाबू किशनदा की जीवनदृष्टि को मानक मानते हैं। बदलते सामाजिक व्यवहार तथा परिवार की नई रुचियों से उनका सहज मेल नहीं बैठता। परिवार के सदस्य उनकी मान्यताओं को उसी रूप में स्वीकार नहीं करते।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण इस मूल्यगत दूरी के कारण उनका अपने परिवार से मतभेद रहता है। (A) का अत्यंत सरल जीवन परिणाम नहीं है। (B) और (C) पूरे परिवार को आदर्शवादी या सिद्धांतवादी बताते हैं, जबकि कहानी में परिवार के भीतर दृष्टियों का अंतर उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष उनका अपने परिवार से मतभेद रहने लगा। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: परिवार के सभी सदस्यों पर एक पात्र के आदर्श लागू मानने के बजाय उनके व्यवहार में मौजूद मतभेद देखें।

6(ix). मुअनजो-दड़ो में मिले विशाल कोठार का प्रयोग किस लिए किया जाता होगा ? [1 अंक]

(A) कर के रूप में एकत्रित अनाज रखने के लिए

(B) कर के रूप में एकत्रित धन रखने के लिए

(C) उपासना केंद्र के रूप में

(D) महासभा भवन के रूप में

सही उत्तर: (A) कर के रूप में एकत्रित अनाज रखने के लिए

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक संरचना का नाम उसके संभावित उपयोग का संकेत देता है।
- कोठार अनाज के संग्रह और सुरक्षित भंडारण से संबंधित संरचना है।

चरण 1: कोठार का संभावित उपयोग मुअनजो-दड़ो के विशाल कोठार में कर के रूप में एकत्र किया गया अनाज रखा जाता होगा। उसका विशाल आकार सामूहिक भंडारण की आवश्यकता से मेल खाता है। प्रश्न इस संरचना का संभावित उपयोग पूछता है।

चरण 2: दूसरे विकल्पों का अंतर (B) में धन रखने की बात है, जबकि कोठार का संबंध अनाज से है। (C) का उपासना केंद्र धार्मिक कार्यों और (D) का महासभा भवन सामूहिक सभा से जुड़ा है। ये कोठार के भंडारण संबंधी कार्य को व्यक्त नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष कर के रूप में एकत्रित अनाज रखने के लिए। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कोठार, स्नानागार और सभाभवन जैसे नामों को उनके विशिष्ट कार्य से जोड़कर विकल्प चुनें।

6(v). यशोधर बाबू सिल्वर वैडिंग मनाने के पक्ष में क्यों नहीं थे ? [1 अंक]

(A) वे इसे पैसों की बर्बादी मानते थे

(B) वे इसे समय की बर्बादी मानते थे

(C) वे इसे विदेशी कस्टम मानते थे

(D) वे रूढ़िवादी विचारों के थे

सही उत्तर: (C) वे इसे विदेशी कस्टम मानते थे

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के निर्णय का कारण उसके कथन और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से निर्धारित होता है।
- यशोधर बाबू आधुनिक उत्सव पद्धतियों के प्रति सहज नहीं हैं और अपनी परंपरागत मान्यताओं को महत्त्व देते हैं।

चरण 1: उत्सव के प्रति दृष्टि सिल्वर वैडिंग विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाने का उत्सव है। यशोधर बाबू इसे विदेशी कस्टम मानते हैं। इसी कारण वे इस तरह की वर्षगाँठ मनाने के पक्ष में नहीं हैं; उनका विरोध सांस्कृतिक असहजता से जुड़ा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) पैसों और (B) समय की बर्बादी को कारण बताते हैं, पर इस प्रसंग का सटीक आधार विदेशी कस्टम मानना है। (D) उनके व्यक्तित्व का सामान्य मूल्यांकन है; वह प्रश्न में पूछे गए विशेष उत्सव के विरोध का उतना निश्चित कारण नहीं देता।

चरण 3: निष्कर्ष वे इसे विदेशी कस्टम मानते थे। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पात्र के सामान्य स्वभाव वाले विकल्प के स्थान पर संबंधित प्रसंग का सीधा और विशिष्ट कारण चुनें।

6(vi). आनंदा के पिता ईख पेरने का काम दूसरे किसानों से पहले ही क्यों शुरू कर देते थे ? [1 अंक]

(A) ईख की अच्छी खासी कीमत पाने के लिए

(B) जल्दी ही खेती के काम से मुक्ति पाने के लिए

(C) गाँव में इधर-उधर घूमने के लिए

(D) दूसरे किसानों से पहले काम समाप्त करने के लिए

सही उत्तर: (A) ईख की अच्छी खासी कीमत पाने के लिए

हल:

अवधारणा:

- किसान के कृषि संबंधी निर्णय में उपज से मिलने वाली आय और बाजार का समय महत्त्व रखते हैं।
- ईख पेरने का काम पहले शुरू करने के पीछे आर्थिक लाभ पाने का उद्देश्य समझना आवश्यक है।

चरण 1: समय से पहले काम का उद्देश्य आनंदा के पिता दूसरे किसानों से पहले ईख पेरना शुरू कर देते थे, जिससे अच्छी कीमत प्राप्त हो सके। शुरुआती समय में तैयार माल को बेचकर अधिक लाभ लेने की इच्छा उनके इस निर्णय का आधार थी।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) खेती से मुक्ति और (C) गाँव में घूमना इस काम को पहले शुरू करने का प्रमुख आर्थिक कारण नहीं बताते। (D) केवल काम पहले समाप्त करने की बात दोहराता है; वह यह स्पष्ट नहीं करता कि जल्दी काम करने से क्या लाभ अपेक्षित था।

चरण 3: निष्कर्ष ईख की अच्छी खासी कीमत पाने के लिए। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: काम जल्दी शुरू करने के प्रश्न में केवल समय बचाना न मानें; पाठ में बताए आर्थिक उद्देश्य की पहचान करें।

6(vii). चौथी से पाँचवी कक्षा तक अपनी लगने वाली पाठशाला आनंदा को एकदम पराई जैसी क्यों लगने लगी ? [1 अंक]

(A) सहपाठियों के पास हो आगे की कक्षा में चले जाने के कारण

(B) मास्टर जी के कठोर व्यवहार के कारण

(C) चव्हान के लड़के द्वारा खिल्ली उड़ाने के कारण

(D) नई कक्षा की कठिन पढ़ाई के कारण

सही उत्तर: (A) सहपाठियों के पास हो आगे की कक्षा में चले जाने के कारण

हल:

अवधारणा:

- विद्यालय से भावनात्मक जुड़ाव में परिचित सहपाठियों और वातावरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- प्रश्न परिचित पाठशाला के पराई लगने का कारण पूछता है, किसी एक अपमानजनक घटना का प्रभाव नहीं।

चरण 1: बदला हुआ परिचित परिवेश आनंदा के पुराने सहपाठी पास होकर आगे की कक्षा में चले गए थे। उसके लौटने पर वह परिचित साथियों का समूह अब उसकी कक्षा में नहीं था। इसी बदलाव से पहले अपनी लगने वाली पाठशाला उसे पराई जैसी अनुभव हुई।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) में मास्टर जी का कठोर व्यवहार और (D) में कठिन पढ़ाई कारण बताए गए हैं, जो इस अकेलेपन की मूल वजह नहीं हैं। (C) चव्हान के लड़के की खिल्ली एक अलग अप्रिय अनुभव है; पुराने साथियों के आगे बढ़ जाने से उत्पन्न अपरिचय का उत्तर (A) देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सहपाठियों के पास होकर आगे की कक्षा में चले जाने के कारण। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कथा में पास-पास आए प्रसंगों को अलग रखें; पराएपन, अपमान और पढ़ाई की कठिनाई के कारण एक जैसे नहीं होते।

6(viii). 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर बताइए कि राखालदास बनर्जी मुअनजो-दड़ो में किसकी खोज करना चाहते थे। [1 अंक]

(A) गढ़

(B) स्नानागार

(C) महाकुंड

(D) बौद्ध स्तूप

सही उत्तर: (D) बौद्ध स्तूप

हल:

अवधारणा:

- किसी पुरातात्त्विक खोज के आरंभिक उद्देश्य और बाद में मिले अवशेषों का अंतर समझना आवश्यक है।
- राखालदास बनर्जी के अन्वेषण का प्रारंभिक लक्ष्य बौद्ध स्तूप से जुड़ा था।

चरण 1: खोज का आरंभिक उद्देश्य राखालदास बनर्जी मुअनजो-दड़ो में बौद्ध स्तूप की खोज करना चाहते थे। प्रश्न यह पूछता है कि वे किसकी खोज के उद्देश्य से वहाँ पहुँचे थे, न कि उत्खनन में कौन-कौन सी प्रसिद्ध संरचनाएँ सामने आईं।

चरण 2: बाकी विकल्पों का परीक्षण (A) गढ़, (B) स्नानागार और (C) महाकुंड प्राचीन नगर के अवशेषों से संबंधित नाम हैं। इनमें से किसी को उनकी आरंभिक खोज का लक्ष्य मानना प्रश्न के ऐतिहासिक प्रसंग को बदल देगा। बौद्ध स्तूप वाला विकल्प ही पूछे गए उद्देश्य को बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष वे बौद्ध स्तूप की खोज करना चाहते थे। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: खोजकर्ता क्या ढूँढ़ने गया था और अंततः क्या मिला, इन दो बातों को अलग करके उत्तर चुनें।

6(x). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए :
कथन *(A)* : सिंधु घाटी सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्यबोध है।
कारण *(R)* : (I) खुदाई के दौरान मिली वस्तुओं से उनकी कला-सिद्धता का ज्ञान होता है।
(II) नगर-नियोजन से उनकी सौंदर्य-प्रियता का ज्ञान होता है। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।

(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) ग़लत है।

(D) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन-कारण प्रश्न में कथन की सत्यता, कारण की सत्यता और दोनों का व्याख्यात्मक संबंध जाँचा जाता है।
- कला की वस्तुओं के साथ नगर की सुव्यवस्थित रचना भी किसी सभ्यता के सौंदर्यबोध का प्रमाण होती है।

चरण 1: कथन की जाँच सिंधु घाटी सभ्यता का सौंदर्यबोध उसकी प्रमुख खूबी है। पाठ में उसके जीवन और निर्माण में दिखाई देने वाली कलात्मक समझ का महत्त्व उभरता है। इसलिए कथन (A) सही है।

चरण 2: कारण के दोनों अंशों की जाँच खुदाई में प्राप्त कलात्मक वस्तुएँ निर्माण-कौशल और कला-सिद्धता दिखाती हैं। नगर-नियोजन में सुव्यवस्था तथा रचना का संतुलन उनकी सौंदर्यप्रियता का संकेत देता है। इस प्रकार कारण के (I) और (II), दोनों अंश सही हैं।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प कारण में वे ठोस आधार दिए गए हैं जिनसे कथन में कहा गया सौंदर्यबोध स्पष्ट होता है।

इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (B) दोनों को गलत बताता है, (C) सही कारण को गलत और (D) सही कथन को गलत मानता है; अतः ये तीनों विकल्प असंगत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कथन और कारण को अलग-अलग सही पाने के बाद यह भी देखें कि कारण कथन के समर्थन में ठोस प्रमाण देता है या नहीं।

7(क). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
शहरों में बढ़ती ट्रैफिक जाम की समस्या [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समस्या-केंद्रित रचनात्मक लेख में अनुभव, कारण, प्रभाव और व्यावहारिक समाधान को एक सूत्र में बाँधना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में संक्षिप्त शीर्षक, विषय से जुड़ा प्रभावशाली आरंभ और सार्थक समापन आवश्यक हैं।

चरण 1: लेख का स्वरूप और भाषा यह रचनात्मक लेख है, इसलिए उपयुक्त शीर्षक के बाद प्रवाहपूर्ण अनुच्छेद लिखा जाएगा। विषय से जुड़े दृश्य और अनुभव भाषा को प्रभावशाली बनाएँगे। औपचारिक पत्र का पता, संबोधन या हस्ताक्षर इसमें आवश्यक नहीं हैं। शब्द-सीमा को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वाक्य मूल विषय को आगे बढ़ाए।

चरण 2: विषयवस्तु की रूपरेखा आरंभ में जाम का सजीव दृश्य रखें। मध्य में निजी वाहनों, गलत पार्किंग तथा नियमों की उपेक्षा को कारण बताते हुए समय, ईंधन और स्वास्थ्य पर प्रभाव दिखाएँ। अंत में सार्वजनिक परिवहन और नागरिक अनुशासन के माध्यम से आशा जगाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **शहरों की थमती रफ्तार**

सुबह का समय है। सड़क पर गाड़ियों की कतार किसी अंतहीन साँप की तरह रेंग रही है। हॉर्न का शोर और धुएँ की चादर शहर की पहचान बनते जा रहे हैं। कहीं विद्यार्थी विद्यालय पहुँचने को बेचैन हैं, तो कहीं एंबुलेंस रास्ता तलाश रही है। बढ़ती निजी गाड़ियाँ, अव्यवस्थित पार्किंग और यातायात नियमों की अनदेखी इस समस्या को गंभीर बनाते हैं। जाम केवल समय नहीं चुराता, ईंधन और स्वास्थ्य भी नष्ट करता है। इसका समाधान सड़कों को चौड़ा करने भर से नहीं होगा। सुविधाजनक सार्वजनिक परिवहन, साझा वाहन और सुरक्षित पैदल मार्ग आवश्यक हैं। हमें भी गलत दिशा में गाड़ी चलाने तथा सड़क पर वाहन खड़ा करने से बचना चाहिए। अनुशासित नागरिक और जिम्मेदार प्रशासन मिलकर ही शहर की रुकी हुई धड़कन को फिर गति दे सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त लेख में विषय को सजीव चित्रण, क्रमबद्ध विचार और सार्थक संदेश के साथ लगभग 120 शब्दों में प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: जाम का दृश्य लिखने के बाद उसके दो कारण और दो उपाय जोड़ें; केवल शिकायतों की सूची न बनाएँ।

7(ख). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
पर्वतीय यात्रा के दौरान जब अचानक भू-स्खलन हुआ [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुभव-आधारित रचनात्मक लेख में घटनाक्रम, वातावरण, मनःस्थिति और अनुभव से मिली सीख का स्वाभाविक विकास होना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में संक्षिप्त शीर्षक, विषय से जुड़ा प्रभावशाली आरंभ और सार्थक समापन आवश्यक हैं।

चरण 1: लेख का स्वरूप और भाषा यह रचनात्मक लेख है, इसलिए उपयुक्त शीर्षक के बाद प्रवाहपूर्ण अनुच्छेद लिखा जाएगा। विषय से जुड़े दृश्य और अनुभव भाषा को प्रभावशाली बनाएँगे। औपचारिक पत्र का पता, संबोधन या हस्ताक्षर इसमें आवश्यक नहीं हैं। शब्द-सीमा को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वाक्य मूल विषय को आगे बढ़ाए।

चरण 2: विषयवस्तु की रूपरेखा पहले यात्रा का शांत दृश्य प्रस्तुत करें। फिर पत्थर गिरने और मार्ग रुकने से उत्पन्न संकट दिखाएँ। यात्रियों की प्रतिक्रिया, सुरक्षित दूरी, सहायता की सूचना तथा सहयोग का वर्णन करें। बचाव के बाद अनुभव से मिली सीख के साथ लेख समाप्त करें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **एक मोड़ पर ठहर गई यात्रा**

हमारी बस पहाड़ी रास्ते पर आगे बढ़ रही थी। खिड़की से बादलों को छूते देवदार दिखाई दे रहे थे। अचानक तेज गड़गड़ाहट सुनाई दी और सामने ढलान से पत्थर गिरने लगे। चालक ने सुरक्षित दूरी पर बस रोक दी। कुछ ही क्षणों में सड़क मलबे से भर गई। यात्रियों के चेहरों का उत्साह भय में बदल गया। चालक के निर्देश पर हम शांत रहे और जोखिम वाले हिस्से से दूर सुरक्षित स्थान पर पहुँचे। एक यात्री ने सहायता दल को सूचना दी। हमने बच्चों और बुजुर्गों को पानी दिया तथा उन्हें ढाढ़स बँधाया। कई घंटे बाद राहतकर्मियों ने रास्ता खोला और हमें सावधानी से आगे भेजा। उस दिन पहाड़ों की सुंदरता के साथ उनकी शक्ति भी समझ आई। संकट में धैर्य, सहयोग और सतर्कता ही हमारे सच्चे सहयात्री हैं।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त लेख में विषय को सजीव चित्रण, क्रमबद्ध विचार और सार्थक संदेश के साथ लगभग 120 शब्दों में प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: घटना को यात्रा, अचानक संकट, सुरक्षित प्रतिक्रिया और मिली सीख के क्रम में लिखें; अनावश्यक रोमांच के लिए जोखिम भरे कार्य न जोड़ें।

7(ग). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जब अंतरिक्ष में घर बन जाएँगे [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कल्पनात्मक विषय पर रचनात्मक लेख लिखते समय भविष्य की संभावनाओं को जीवन के परिचित अनुभवों से जोड़ना चाहिए। वैज्ञानिक संभावना आधार बनती है, लेकिन लेख का आकर्षण मौलिक दृश्य, संवेदना और विचार से आता है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में एक केंद्रीय भाव, उपयुक्त शीर्षक तथा सुसंगत आरंभ, मध्य और अंत आवश्यक हैं। नीचे दिया गया लेख एक स्वतंत्र नमूना है; इसी विषय पर अन्य मौलिक और सार्थक अभिव्यक्तियाँ भी स्वीकार्य हैं।

चरण 1: रूप और प्रस्तुति निर्धारित करें यह स्वतंत्र रचनात्मक लेख है। ऊपर विषय के अनुरूप शीर्षक दिया जाएगा और उसके बाद सुसंगत अनुच्छेद लिखा जाएगा। इसमें पत्र जैसा पता, संबोधन या समापन नहीं जोड़ा जाएगा। भाषा सहज, चित्रात्मक और विषय के अनुकूल रखी जाएगी। अनावश्यक भूमिका से बचकर सीधे दृश्य या अनुभव से आरंभ करना प्रभावी रहेगा।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाएँ लेख का आरंभ अंतरिक्ष में बसे घर के दृश्य से होगा। बीच में वहाँ की दिनचर्या, सुविधाएँ और चुनौतियाँ आएँगी। अंत पृथ्वी के प्रति जिम्मेदारी के विचार से होगा। वर्णन में कल्पना और तार्किकता का संतुलन रखा जाएगा।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **जब अंतरिक्ष में घर बन जाएँगे**

सुबह आँख खुलेगी तो खिड़की के बाहर नीला आकाश नहीं, नीली पृथ्वी दिखाई देगी। जब अंतरिक्ष में घर बन जाएँगे, तब हमारा पता किसी शहर की गली के बजाय अंतरिक्ष की किसी बस्ती का होगा। बच्चे विशेष कक्षों में खेलेंगे और बगीचों में उगते पौधे हमें धरती की याद दिलाएँगे। पानी की प्रत्येक बूँद दोबारा उपयोग में लाई जाएगी। हवा और भोजन की व्यवस्था वैज्ञानिक तकनीकों पर निर्भर होगी। छुट्टियों में पृथ्वी की यात्रा सबसे प्रिय कार्यक्रम बनेगी। फिर भी क्या मशीनों से घिरे इन घरों में बारिश की खुशबू और पक्षियों का संगीत मिल सकेगा? शायद तभी हम समझेंगे कि पृथ्वी कितनी अनमोल है। अंतरिक्ष में घर बनाना उपलब्धि होगी, लेकिन अपनी धरती को रहने योग्य बनाए रखना हमारी पहली जिम्मेदारी रहेगी।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख दिए गए विषय को कल्पना, अनुभव और स्पष्ट विचार के साथ विकसित करता है। शीर्षक, घटनाओं का क्रम तथा सार्थक अंत मिलकर रचना को पूर्णता देते हैं। विषय से जुड़ी अभिव्यक्ति और लगभग निर्धारित शब्द सीमा इसके लेखन की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: पहले आरंभ, मुख्य दृश्य और अंत के तीन संकेत लिख लें; फिर लगभग 120 शब्दों में उन्हीं को जोड़कर मौलिक रचनात्मक लेख तैयार करें।

7(घ). निम्नलिखित दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

स्वप्न में प्रिय हास्य कलाकार से भेंट [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वप्न पर आधारित रचनात्मक लेख में अनुभव का क्रम स्पष्ट होना चाहिए। स्वाभाविक संवाद, हल्का हास्य और अंत में स्वप्न टूटने का प्रसंग कथा को रोचक तथा पूर्ण बनाते हैं। हास्य का उद्देश्य किसी का अपमान करना नहीं, आनंद और सकारात्मक दृष्टि जगाना है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में एक केंद्रीय भाव, उपयुक्त शीर्षक तथा सुसंगत आरंभ, मध्य और अंत आवश्यक हैं। नीचे दिया गया लेख एक स्वतंत्र नमूना है; इसी विषय पर अन्य मौलिक और सार्थक अभिव्यक्तियाँ भी स्वीकार्य हैं।

चरण 1: रूप और प्रस्तुति निर्धारित करें यह स्वतंत्र रचनात्मक लेख है। ऊपर विषय के अनुरूप शीर्षक दिया जाएगा और उसके बाद सुसंगत अनुच्छेद लिखा जाएगा। इसमें पत्र जैसा पता, संबोधन या समापन नहीं जोड़ा जाएगा। भाषा सहज, चित्रात्मक और विषय के अनुकूल रखी जाएगी। अनावश्यक भूमिका से बचकर सीधे दृश्य या अनुभव से आरंभ करना प्रभावी रहेगा।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाएँ आरंभ में स्वप्न के दृश्य और कलाकार से भेंट का उल्लेख होगा। मध्य में छोटा संवाद और हास्यपूर्ण घटना आएगी। अंतिम पंक्तियों में जागने की घटना को कलाकार से मिली सीख से जोड़ा जाएगा। लेख प्रथम पुरुष में लिखा जाएगा।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **स्वप्न में प्रिय हास्य कलाकार से भेंट**

कल रात स्वप्न में मैं एक रंगमंच पर पहुँच गया। सामने मेरे प्रिय हास्य कलाकार खड़े थे। मुझे देखते ही बोले, “इतने गंभीर क्यों हो? क्या मुसकराने पर भी परीक्षा होती है?” मैं हँस पड़ा। मैंने उनसे सफल होने का रहस्य पूछा। वे बोले, “पहले अपनी गलतियों पर हँसना सीखो, फिर दूसरों को हँसाना आसान होगा।” तभी उन्होंने मेरी नकल उतारी—किताब खुली थी, लेकिन निगाहें घड़ी पर थीं! दर्शकों के साथ मैं भी ठहाका लगाने लगा। उन्होंने समझाया कि अच्छा हास्य किसी का दिल दुखाए बिना उदासी दूर करता है। मैं उनसे हाथ मिलाने बढ़ा ही था कि अलार्म बज उठा। आँख खुली तो रंगमंच गायब था। फिर भी चेहरे पर मुसकान थी और मन में निश्चय था—आज की शुरुआत हँसते हुए करूँगा।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख दिए गए विषय को कल्पना, अनुभव और स्पष्ट विचार के साथ विकसित करता है। शीर्षक, घटनाओं का क्रम तथा सार्थक अंत मिलकर रचना को पूर्णता देते हैं। विषय से जुड़ी अभिव्यक्ति और लगभग निर्धारित शब्द सीमा इसके लेखन की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: पहले आरंभ, मुख्य दृश्य और अंत के तीन संकेत लिख लें; फिर लगभग 120 शब्दों में उन्हीं को जोड़कर मौलिक रचनात्मक लेख तैयार करें।

8(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

कहानी के वे कौन-से तत्त्व हैं जो नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्यों में नहीं ढल पाते ? इन्हें नाटक में किस प्रकार स्थान दिया जा सकता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक विवरण और पात्रों के मनोभाव सीधे बता सकता है; नाटक में इन्हें मंचीय क्रिया तथा संवाद का रूप देना पड़ता है।
- रूपांतरण में मूल कथ्य सुरक्षित रखते हुए अदृश्य मानसिक घटनाओं को अभिव्यक्त करने योग्य बनाना आवश्यक है।

चरण 1: दृश्य में न ढलने वाले अंश पहचानें कथावाचक की लंबी टिप्पणियाँ, विस्तृत वातावरण-वर्णन, पात्रों की अनकही भावनाएँ और मन में चलने वाला चिंतन सीधे मंच पर दिखाई नहीं देते। केवल पात्र को मंच पर उपस्थित कर देने से दर्शक उसके अंतर्द्वंद्व को नहीं जान सकता। इस परिवर्तन में विवरण को यांत्रिक रूप से दोहराने के बजाय माध्यम की विशेषताओं और दर्शक अथवा श्रोता की समझ को ध्यान में रखना चाहिए।

चरण 2: उपयुक्त नाटकीय साधन चुनें मनोभावों के लिए स्वगत कथन तथा संवाद, आवश्यक सूचना के लिए सूत्रधार और वातावरण के लिए प्रकाश, ध्वनि व मंच-सज्जा उपयोगी हैं। इनका प्रयोग मूल भावना के अनुरूप और नाटक की गति बनाए रखते हुए करना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कहानी में कथावाचक की टिप्पणियाँ, पात्रों के मनोभाव, आंतरिक द्वंद्व तथा लंबे वर्णन सीधे दृश्यों में नहीं ढल पाते। इन्हें पात्रों के संवाद, स्वगत कथन, हावभाव और अभिनय द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। आवश्यक विवरण सूत्रधार के माध्यम से दिए जा सकते हैं। वातावरण तथा भावस्थिति को प्रकाश, ध्वनि और मंच-सज्जा के संकेतों से प्रभावी बनाया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष अदृश्य भावों और कथात्मक विवरणों को संवाद, अभिनय, स्वगत कथन तथा आवश्यक मंचीय संकेतों के माध्यम से स्थान दिया जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दृश्य में न ढलने वाले तत्त्व लिखें और फिर प्रत्येक के लिए संवाद, स्वगत या मंचीय संकेत जैसा उपाय जोड़ें।

8(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक के लिए संवाद लिखते समय क्या सावधानी बरतनी चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्र, स्थान और घटनाओं को संवाद तथा ध्वनि के सहारे समझता है।
- संवादों की सहजता, स्पष्टता और पात्रानुकूल भाषा नाटकीय प्रभाव बनाए रखती है।

चरण 1: श्रव्य माध्यम की आवश्यकता समझें श्रोता मंच या पात्रों के हावभाव नहीं देख सकता। इसलिए संवाद से बोलने वाले पात्र का परिचय, परिस्थिति और आवश्यक घटनाक्रम स्पष्ट होना चाहिए। केवल दृश्य संकेत के भरोसे आवश्यक सूचना नहीं छोड़नी चाहिए। इस परिवर्तन में विवरण को यांत्रिक रूप से दोहराने के बजाय माध्यम की विशेषताओं और दर्शक अथवा श्रोता की समझ को ध्यान में रखना चाहिए।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति की सावधानियाँ तय करें लंबे, जटिल वाक्यों से बचकर बोलचाल की स्वाभाविक भाषा रखें। संवाद पात्र की आयु, स्वभाव और सामाजिक स्थिति के अनुकूल हों। सूचना ठूँसने, अनावश्यक दोहराव और उपदेशात्मक वक्तव्यों के बजाय संवाद में क्रिया तथा तनाव आगे बढ़ना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक के संवाद सरल, संक्षिप्त, सहज तथा पात्रानुकूल होने चाहिए। श्रोता केवल सुनता है, इसलिए संवादों से पात्रों की पहचान, स्थान, परिस्थिति और घटनाक्रम स्पष्ट हों। लंबे वर्णन तथा कठिन शब्दों से बचें। बोलचाल की भाषा, उचित विराम और स्वर के उतार-चढ़ाव का ध्यान रखें। संवाद कथा को आगे बढ़ाएँ तथा ध्वनि-संकेतों के साथ स्वाभाविक तालमेल बनाएँ।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो के संवाद सुनते ही समझ में आने वाले, पात्रानुकूल तथा घटना और परिस्थिति स्पष्ट करने वाले होने चाहिए।

त्वरित सुझाव: हर संवाद को सुनकर जाँचें कि बिना दृश्य देखे भी पात्र, परिस्थिति और घटना का आशय स्पष्ट हो रहा है या नहीं।

8(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
कहानी को नाटक में रूपांतरित करने हेतु किन्हीं तीन आवश्यक बिंदुओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कहानी के कथ्य को मंच पर अभिनीत होने योग्य दृश्यों और संवादों में बदला जाता है।
- कथ्य की रक्षा, दृश्य-योजना और संवाद-रचना रूपांतरण के तीन प्रमुख आधार हैं।

चरण 1: मूल कथ्य और घटनाओं का चयन करें कहानी का केंद्रीय भाव, मुख्य संघर्ष और पात्रों के संबंध पहचानें। मंच की समय-सीमा के अनुसार आवश्यक घटनाएँ चुनें, किंतु चयन से कहानी का मूल आशय या घटनाओं का कारण-संबंध नहीं बदलना चाहिए। इस परिवर्तन में विवरण को यांत्रिक रूप से दोहराने के बजाय माध्यम की विशेषताओं और दर्शक अथवा श्रोता की समझ को ध्यान में रखना चाहिए।

चरण 2: मंचीय प्रस्तुति की योजना बनाएँ घटनाओं को स्थान, समय और क्रिया के अनुसार दृश्यों में बाँटें। वर्णनात्मक अंशों को पात्रानुकूल संवाद, अभिनय तथा आवश्यक ध्वनि-प्रकाश संकेतों में बदलें। दृश्य-परिवर्तन व्यावहारिक हों और संवाद नाटक को आगे बढ़ाएँ।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कहानी के नाट्य रूपांतरण में तीन बातें आवश्यक हैं। पहला, मूल कथ्य, केंद्रीय संघर्ष और प्रमुख पात्रों को सुरक्षित रखते हुए घटनाओं का चयन किया जाए। दूसरा, घटनाओं को समय, स्थान और मंचीय सुविधा के अनुसार दृश्यों में बाँटा जाए। तीसरा, कथात्मक वर्णन तथा मनोभावों को पात्रानुकूल संवाद, अभिनय और आवश्यक ध्वनि-प्रकाश संकेतों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए।

चरण 4: निष्कर्ष मूल कथ्य का संरक्षण, मंचानुकूल दृश्य-विभाजन और वर्णन का संवाद व अभिनय में परिवर्तन तीन आवश्यक बिंदु हैं।

त्वरित सुझाव: तीन बिंदु स्पष्ट क्रम में लिखें: क्या सुरक्षित रखना है, घटनाएँ कैसे बाँटनी हैं और वर्णन को मंच पर कैसे व्यक्त करना है।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :
रेडियो और टी.वी. के लिए समाचार लिखते समय किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है, जबकि टेलीविजन दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का उपयोग करता है। समाचार की भाषा माध्यम की प्रकृति के अनुकूल होनी चाहिए।
- प्रसारण के समाचार सुनते ही समझ में आने चाहिए। इसलिए सरल भाषा, छोटे वाक्य, तथ्यात्मक शुद्धता और स्पष्ट क्रम आवश्यक हैं।

चरण 1: उत्तर के प्रमुख बिंदु चुनना पहले दोनों माध्यमों के साझा नियम लिखें: समाचार की सत्यता, निष्पक्षता, सहज शब्दावली और समय की सीमा। इसके बाद उनका अंतर स्पष्ट करें। रेडियो में दृश्य नहीं होते, इसलिए शब्दों से घटना स्पष्ट करनी होती है; टेलीविजन में लिखे हुए पाठ और दिखाए जाने वाले दृश्यों के बीच तालमेल चाहिए। कठिन आँकड़ों और लंबे वाक्यों से बचने का कारण श्रोता की तत्काल ग्रहणशीलता है। श्रोता छपी हुई सामग्री की तरह पिछला वाक्य दोबारा पढ़ नहीं सकता, इसलिए एक वाक्य में एक ही प्रमुख सूचना देना उपयोगी है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर रेडियो और टी.वी. के समाचारों की भाषा सरल, सहज, बोलचाल की और तुरंत समझ आने वाली होनी चाहिए। वाक्य छोटे, स्पष्ट तथा अनावश्यक विशेषणों से मुक्त हों। तथ्यों की शुद्धता, निष्पक्षता, नवीनता और निर्धारित समय-सीमा का ध्यान रखा जाए। कठिन शब्दों, लंबे आँकड़ों और जटिल वाक्य-रचना से बचना चाहिए। रेडियो में शब्दों से घटना का स्पष्ट चित्र उभरना चाहिए। टी.वी. में समाचार के शब्द दृश्यों के अनुरूप हों और दृश्य में स्पष्ट दिख रही बातों की अनावश्यक पुनरावृत्ति न हो।

चरण 3: निष्कर्ष प्रभावी प्रसारण समाचार के लिए सरलता, संक्षिप्तता, तथ्यात्मक शुद्धता और माध्यम के अनुरूप प्रस्तुति आवश्यक

हैं। रेडियो में श्रव्य स्पष्टता तथा टी.वी. में दृश्य और शब्द का सामंजस्य विशेष महत्त्व रखते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले साझा भाषा-नियम लिखें, फिर रेडियो की श्रव्यता और टी.वी. के दृश्य-शब्द सामंजस्य का एक-एक बिंदु अवश्य जोड़ें।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष लेखन से क्या अभिप्राय है ? विशेष लेखन की भाषा और शैली सामान्य लेखन से अलग क्यों होती है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में विशेष लेखन किसी विशिष्ट क्षेत्र के विषयों, घटनाओं और समस्याओं का विशेषज्ञ जानकारी के आधार पर किया गया लेखन है।
- विषय की प्रकृति भाषा और शैली को प्रभावित करती है। तकनीकी शब्दावली, प्रामाणिक आँकड़े, विश्लेषण और विशेषज्ञ स्रोत विशेष लेखन को आधार देते हैं।

चरण 1: परिभाषा और अंतर का आधार समझना प्रश्न के दोनों भागों का उत्तर देना आवश्यक है। पहले विशेष लेखन का अर्थ और अर्थव्यवस्था, विज्ञान या खेल जैसे क्षेत्रों के उदाहरण दें। फिर स्पष्ट करें कि इन क्षेत्रों की अपनी अवधारणाएँ और पारिभाषिक शब्द होते हैं। इसलिए केवल सामान्य सूचना देना पर्याप्त नहीं होता; लेखक को पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव भी समझाने पड़ते हैं। तकनीकी जानकारी को पाठक के लिए बोधगम्य बनाना भी लेखक का दायित्व है। विशेष लेखन का अर्थ अनावश्यक रूप से कठिन भाषा लिखना नहीं है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर पत्रकारिता में विशेष लेखन का अभिप्राय अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल, कृषि आदि किसी विशिष्ट क्षेत्र पर गहन जानकारी और विशेषज्ञता के आधार पर लिखना है। इसमें घटनाओं की सूचना के साथ उनकी पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव का विश्लेषण भी होता है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी पारिभाषिक शब्दावली और विशिष्ट अवधारणाएँ होती हैं; इसलिए इसकी भाषा और शैली सामान्य लेखन से अलग होती है। इसमें प्रामाणिक आँकड़ों, विशेषज्ञ स्रोतों और तथ्यपरक विवेचन का महत्त्व है। फिर भी प्रस्तुति पाठकों के लिए स्पष्ट और बोधगम्य रखी जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन विषयगत विशेषज्ञता पर आधारित पत्रकारिता है। विषय की विशिष्ट शब्दावली और विश्लेषण की आवश्यकता उसकी भाषा तथा शैली को सामान्य लेखन से अलग बनाती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद दो क्षेत्र उदाहरणस्वरूप लिखें और भाषा-शैली के अंतर को पारिभाषिक शब्दावली तथा विश्लेषण की आवश्यकता से जोड़ें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में से सबसे पुराने माध्यम की दो खूबियाँ और दो कमियाँ लिखिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आधुनिक जनसंचार माध्यमों में मुद्रित माध्यम सबसे पुराना है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख रूप हैं।
- माध्यम का मूल्यांकन उसकी उपयोगिता और सीमाओं, दोनों के आधार पर किया जाता है। यहाँ दो खूबियाँ और दो कमियाँ अलग-अलग बताना आवश्यक है।

चरण 1: माध्यम की पहचान और उत्तर की रूपरेखा यहाँ अपेक्षित माध्यम मुद्रित माध्यम है, जिसका प्रतिनिधि समाचारपत्र है। उत्तर में पहले उसकी पहचान करें, फिर पढ़ने और सुरक्षित रखने की सुविधा समझाएँ। अंत में निरक्षर पाठक तथा तत्काल बदलते समाचार के संदर्भ में उसकी सीमाएँ दें। रेडियो को सबसे पुराना बताना सही नहीं होगा, क्योंकि मुद्रण उससे पहले प्रचलित था। मुद्रित सामग्री को

पाठक अपनी रुचि के अनुसार चुन भी सकता है। फिर भी पूछी गई संख्या का ध्यान रखते हुए आदर्श उत्तर में दो मुख्य खूबियों तक सीमित रहें। तत्काल समाचार पहुँचाने की सीमा का अर्थ यह नहीं है कि समाचारपत्र उपयोगी नहीं हैं; यह उनके प्रकाशन और वितरण की प्रकृति से जुड़ी सीमा है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर आधुनिक जनसंचार माध्यमों में मुद्रित माध्यम सबसे पुराना है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसकी पहली खूबी यह है कि पाठक अपनी सुविधा और गति से सामग्री पढ़ सकता है तथा कठिन अंश दोबारा समझ सकता है। दूसरी खूबी यह है कि सामग्री को सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ की तरह उपयोग किया जा सकता है। इसकी पहली कमी है कि निरक्षर व्यक्ति इसका सीधे उपयोग नहीं कर सकता। दूसरी कमी यह है कि छपने के बाद नई सूचना तुरंत जोड़ना या समाचार बदलना संभव नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित माध्यम की दो खूबियाँ सुविधानुसार पुनर्पाठ और स्थायी संदर्भ हैं; दो कमियाँ साक्षरता पर निर्भरता तथा तत्काल अद्यतन का अभाव हैं।

त्वरित सुझाव: पहले मुद्रित माध्यम का नाम लिखें, फिर ठीक दो खूबियाँ और दो कमियाँ स्पष्ट क्रम में दें।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'आत्मपरिचय' कविता से उद्धृत पंक्ति 'जग पूछ रहा उनको, जो जग की गति' के आधार पर लिखिए कि संसार में किन्हें मान-सम्मान मिलता है और क्यों। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में कवि की स्वतंत्र जीवनदृष्टि और संसार की प्रचलित मान्यताओं के बीच अंतर उभरता है।
- प्रश्न की पंक्ति संसार की रुचि के अनुरूप चलने वालों को मिलने वाली प्रतिष्ठा पर टिप्पणी करती है।

चरण 1: पंक्ति का आशय समझना कवि बताता है कि संसार उन लोगों को पूछता है जो उसकी गति और रुचि के अनुसार चलते हैं तथा उसी की बातों का समर्थन करते हैं। यह सामाजिक मान्यता की प्रवृत्ति है। कवि का स्वयं अपना भावजगत है; इसलिए संसार की प्रशंसा पाने के लिए अपनी स्वतंत्रता छोड़ना उसे स्वीकार नहीं है। उत्तर को केवल धनी या शक्तिशाली व्यक्तियों तक सीमित करना पंक्ति का पूरा आशय व्यक्त नहीं करेगा। यहाँ सम्मान मिलने का कारण संसार के अनुकूल होना है। इसे कवि का आदर्श नहीं समझना चाहिए; कवि तो अपनी अनुभूति और व्यक्तित्व की स्वतंत्रता को अधिक महत्व देता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर संसार में प्रायः उन्हीं लोगों को मान-सम्मान मिलता है जो उसकी प्रचलित मान्यताओं, रुचियों और व्यवहार के अनुरूप चलते हैं। वे संसार की ही बातें कहते और उसका गुणगान करते हैं, इसलिए संसार उन्हें अपना मानकर महत्व देता है। इसके विपरीत कवि अपनी अनुभूतियों और प्रेम के अनुसार जीता है; वह सामाजिक स्वीकृति के लिए अपनी स्वतंत्र दृष्टि नहीं छोड़ता।

चरण 3: निष्कर्ष संसार अपने अनुरूप आचरण और अपना गुणगान करने वालों को सम्मान देता है, क्योंकि उनके विचार उसे अनुकूल और स्वीकार्य लगते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किन्हें और क्यों, दोनों स्पष्ट करें; कवि की स्वतंत्र दृष्टि से अंतर बताने पर आशय खुलता है।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता समाज के संवेदनाशून्य हो जाने का जीता-जागता उदाहरण है। सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता जनसंचार माध्यमों द्वारा पीड़ा के प्रदर्शन और करुणा के व्यावसायिक उपयोग की आलोचना करती है।

- संवेदना का अर्थ पीड़ित की गरिमा समझना है; उसे रुलाकर मनोरंजन प्रस्तुत करना संवेदनहीनता है।

चरण 1: कविता से प्रमाण चुनना कार्यक्रम बनाने वाले स्वयं को समर्थ और सामने बैठे व्यक्ति को अशक्त मानते हैं। वे उसकी सहायता या अनुभव को सहजता से समझने के स्थान पर बार-बार दुख उभारने वाले प्रश्न करते हैं। कैमरे के लिए उसकी आँखों और हावभाव को पकड़ना तथा दर्शकों को भावुक बनाना उनका उद्देश्य है। कार्यक्रम की सफलता मनुष्य के आत्मसम्मान से अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है। कैमरे की उपस्थिति सहानुभूति की गारंटी नहीं बनती। यदि पीड़ित की सहमति, सम्मान और सहज अभिव्यक्ति को महत्व नहीं मिलता, तो ऐसा प्रदर्शन मानवीय संबंध को केवल दृश्य सामग्री में बदल देता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर कविता में दूरदर्शनकर्मी दिव्यांग व्यक्ति की पीड़ा समझने के बजाय उसे कैमरे पर रुलाना चाहते हैं। वे असंवेदनशील प्रश्नों से उसकी विवशता उभारते हैं, ताकि दर्शक भावुक हों और कार्यक्रम प्रभावशाली बने। पीड़ित की गरिमा की जगह उसकी यातना का प्रदर्शन महत्वपूर्ण हो जाता है। मनुष्य के दुख को मनोरंजन और कार्यक्रम की सफलता का साधन बनाना समाज की संवेदनहीनता प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पीड़ित के प्रति सहानुभूति के स्थान पर उसके दुख का प्रदर्शन कविता में संवेदनाशून्य समाज का प्रमाण बनता है।

त्वरित सुझाव: केवल समाज को निर्दयी कहकर न रुकें; रुलाने की कोशिश और पीड़ा के प्रदर्शन को प्रमाण बनाएँ।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'उषा' कविता में सुबह की सुंदरता के लिए प्रयुक्त उपमानों को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता में उषाकाल का बदलता आकाश शंख तथा घरेलू और कलात्मक उपमानों से सजीव हुआ है।
- उपमानों का क्रम अँधेरे से प्रकाश और स्थिर चित्र से गतिशील दृश्य की ओर बढ़ता है।

चरण 1: उपमानों का क्रम पहचानें आरंभ में प्रातःकालीन नभ बहुत नीले शंख जैसा है। फिर वह राख से लीपे गीले चौके जैसा लगता है। आकाश की लालिमा कभी काली सिल पर धुले केसर और कभी स्लेट पर मली लाल खड़िया या चाक जैसी दिखाई देती है। ये परिचित वस्तुएँ रंग और नमी का सजीव अनुभव कराती हैं। घरेलू उपमान उषा को दूर की कोई अपरिचित घटना नहीं रहने देते। राख, केसर और खड़िया के रंग क्रमशः नीलेपन, लालिमा तथा उजाले का अनुभव कराते हैं। इस तरह दृश्य में रंगों की कोमलता और प्रतिक्षण बदलने का भाव एक साथ मिलता है।

चरण 2: चित्र का सौंदर्य समझें नीले आकाश में उभरती उज्ज्वल आभा नीले जल में झिलमिलाती गौर देह जैसी लगती है। इस चित्र में प्रकाश की चमक और गति दोनों आती हैं। सूर्य निकलते ही उषा का यह सम्मोहक जादू टूट जाता है; इसलिए अंतिम परिवर्तन भी वर्णन का आवश्यक अंग है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि ने सुबह के नभ को बहुत नीले शंख और राख से लीपे गीले चौके जैसा बताया है। लालिमा के लिए काली सिल पर धुले लाल केसर तथा स्लेट पर मली लाल खड़िया या चाक के उपमान दिए हैं। उज्ज्वल आभा नीले जल में झिलमिलाती गौर देह जैसी है। ये उपमान उषा के बदलते रंगों और ताज़गी को साकार करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष उषा का सौंदर्य नीले शंख, चौके, सिल, स्लेट और जल में झिलमिलाती देह के परिचित उपमानों से मूर्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल रंग न गिनाएँ; प्रत्येक रंग के साथ उससे जुड़ा चौका, सिल, स्लेट या जल वाला उपमान अवश्य लिखें।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बादल राग' कविता के आधार पर लिखिए कि बादलों को जीवन का पारावार क्यों कहा गया है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल वर्षा के माध्यम से धरती को जल और कृषि को नया जीवन देते हैं।
- कविता में बादल शोषित किसान की आशा तथा जीवनदायी परिवर्तन के प्रतीक हैं।

चरण 1: जीवन से संबंध स्पष्ट करें पारावार का अर्थ विशाल समुद्र है। बादलों में संचित जल वर्षा बनकर सूखी धरती को सींचता है, बीजों को अंकुरित करता है और खेती के द्वारा जीवों के भरण-पोषण का आधार बनता है। इसलिए यहाँ विशाल जीवन-स्रोत का भाव प्रमुख है। वर्षा के बिना कृषि का आधार ही संकट में पड़ जाता है। अतः बादलों का आना केवल मौसम बदलना नहीं, भूखी और सूखी धरती के लिए पोषण का आश्वासन है। कविता में किसान की व्याकुल पुकार इसी आशा को व्यक्त करती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर बादल अपने भीतर अपार जल संजोए रहते हैं। उनकी वर्षा से धरती की प्यास बुझती है, बीज अंकुरित होते हैं और खेतों में फसल उगती है। किसान तथा समस्त जीवों को जीवन और आशा देने के कारण उन्हें जीवन का पारावार कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल अपने अपार जीवनदायी जल और नवजीवन की संभावना के कारण जीवन का पारावार हैं।

त्वरित सुझाव: पारावार का अर्थ विशाल समुद्र समझकर उत्तर को वर्षा, अंकुरण और किसान के जीवन से जोड़ें।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'कवितावली' के छंदों के आधार पर लिखिए कि तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना किससे की है और क्यों। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास ने दरिद्रता की विनाशकारी शक्ति को रावण के रूपक से व्यक्त किया है।
- छंद में जीविका का संकट और पाप का प्रसार गरीबी के व्यापक सामाजिक प्रभाव बताते हैं।

चरण 1: तुलना का आधार समझें कवि दरिद्रता को दसशीश अर्थात दस सिर वाला रावण कहते हैं। रावण की तरह गरीबी भी दुख, भय और त्रास फैलाती है। जीविका के अभाव में लोग विवश होते हैं और समाज में पाप तथा अनाचार बढ़ते हैं। तुलना किसी गरीब व्यक्ति की निंदा नहीं, गरीबी की भयावहता का चित्रण है। छंद में खेती, व्यापार और अन्य जीविकाओं का संकट सामने आता है। इस संदर्भ से स्पष्ट है कि कवि की चिंता केवल किसी व्यक्ति का अभाव नहीं, समूचे जनजीवन में फैली असहायता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना दसशीश अर्थात रावण से की है। रावण की तरह दरिद्रता भी लोगों को दुखी और त्रस्त करती है। जीविका छिनने से लोग विवश होते हैं तथा पाप बढ़ता है; इसलिए उसका विनाशकारी रूप रावण जैसा है।

चरण 3: निष्कर्ष दरिद्रता रावण के समान त्रासदायक और विनाशकारी है; यही इस तुलना का आशय है।

त्वरित सुझाव: दरिद्रता को रावण कहने का कारण जनता का त्रास और पाप का बढ़ना लिखें; गरीबों को दोषी न ठहराएँ।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'रुबाइयाँ' के आधार पर लिखिए कि बच्चा माँ से क्या माँग रहा है और वह उसकी ज़िद को कैसे पूरा करती है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ गोरखपुरी की रुबाई में बालहठ और माँ की स्नेहपूर्ण सूझबूझ चित्रित है।
- दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब बच्चे की असंभव माँग को खेल के रूप में पूरा करता है।

चरण 1: बालहठ और माँ का उपाय पहचानें आँगन में खड़ा बच्चा चाँद को देखकर ललचा जाता है और उसे पाने की ज़िद करता है। माँ बच्चे की भावना समझती है। वह वास्तविक चाँद नहीं ला सकती, इसलिए दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर उसे बहलाती है। इस प्रसंग में बच्चे की सहज कल्पना और माँ की ममता साथ उभरती हैं। माँ उसकी चाह को कठोरता से ठुकराने के बजाय खेल के माध्यम से संतोष देती है; यही दृश्य का घरेलू सौंदर्य है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर बच्चा आँगन में खड़ा होकर चाँद को पाने की ज़िद करता है। माँ उसके बालहठ को स्नेह से पूरा करती है। वह दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है। चाँद को पास देखकर बच्चा प्रसन्न हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चा चाँद माँगता है और माँ दर्पण में उसका प्रतिबिंब दिखाकर उसकी ज़िद पूरी करती है।

त्वरित सुझाव: माँ ने वास्तविक चाँद नहीं उतारा; उत्तर में दर्पण और चाँद के प्रतिबिंब का उल्लेख करें।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ से उद्धृत पंक्ति 'जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है।' — का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में संतोष और संयम को बाज़ार के आकर्षण पर विजय पाने की आंतरिक शक्ति माना गया है।
- तृष्णा अनावश्यक संग्रह बढ़ाती है, जबकि आवश्यकताओं की पहचान मन को स्थिर रखती है।

चरण 1: तृष्णा और संग्रह का अर्थ खोलें तृष्णा वह अतृप्त चाह है जो आवश्यकता पूरी हो जाने पर भी अधिक पाने को उकसाती है। बटोर रखने की स्पृहा के कारण व्यक्ति उपयोगिता के स्थान पर वस्तुओं का ढेर बढ़ाता है। ऐसे मन को बाज़ार अपने आकर्षण से आसानी से विचलित कर देता है। यहाँ संग्रह और आवश्यकता का अंतर समझना आवश्यक है। आवश्यक वस्तु खरीदना स्वाभाविक है, पर केवल दूसरों के पास देखकर वस्तु चाहना तृष्णा है। लेखक इसी अनियंत्रित चाह से सावधान करते हैं।

चरण 2: उस बल का संदर्भ स्पष्ट करें यह बल आत्मसंयम और संतोष का है। भगत जी अपनी सीमित आवश्यकता और निश्चित काम के कारण बाज़ार के प्रलोभन से अप्रभावित रहते हैं। उनकी शक्ति धन के संचय से नहीं, मन की स्थिरता से उत्पन्न होती है। संग्रह की लालसा इस स्थिरता को बनने नहीं देती।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक के अनुसार बाज़ार के आकर्षण से बचने का बल संतोष और आत्मसंयम से आता है। जहाँ अधिकाधिक वस्तुएँ पाने और जमा करने की लालसा है, वहाँ मन स्थिर नहीं रह सकता। व्यक्ति अनावश्यक खरीदारी का शिकार बन जाता है। भगत जी की तरह अपनी आवश्यकता पहचानने और उसी तक सीमित रहने वाला व्यक्ति ही बाज़ार के जादू से बचता है।

चरण 4: निष्कर्ष संग्रह की अतृप्त इच्छा आत्मसंयम को दुर्बल करती है; संतोष ही बाज़ार के प्रलोभन से बचाता है।

त्वरित सुझाव: उस बल को धनबल न लिखें; उसे संतोष और आत्मसंयम से जोड़कर भगत जी का संदर्भ स्पष्ट करें।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव में रात्रि की निस्तब्धता का वर्णन करते हुए, इसे और अधिक भयानक बनाने वाले कारणों का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महामारी के बीच भय और निराशा का वातावरण
- पाठ के प्रसंग के आधार पर कारण और परिणाम को जोड़कर संक्षिप्त उत्तर देना।

चरण 1: रात्रि के वातावरण को समझना कहानी में मलेरिया और हैजे ने गाँव को उजाड़ दिया है। दिन का हाहाकार रात होते ही डरावनी निस्तब्धता में बदल जाता है। इस शांति में जीवन की सामान्य चहल-पहल का लुप्त होना ही मृत्यु के आतंक का संकेत है।

चरण 2: भय बढ़ाने वाली ध्वनियों का विश्लेषण सियारों का क्रंदन, उल्लुओं की डरावनी आवाजें और अँधेरी रात का सन्नाटा वातावरण को भयावह बनाते हैं। झोंपड़ियों से आती कराहें और कै-दस्त की आवाजें रोगियों की असहाय दशा प्रकट करती हैं। बच्चों का माँ-माँ पुकारना तथा स्वजनों का दबा हुआ रुदन इस भय को और गहरा करते हैं। यहाँ निस्तब्धता सुखद शांति नहीं है। रोग और मृत्यु के बीच आदमी का अकेलापन इसे आतंकपूर्ण बनाता है। रोने वाले भी खुलकर रो नहीं पाते; दबे स्वर में व्यक्त शोक से लगता है कि पूरा गाँव भय और विवशता से घिरा हुआ है।

चरण 3: निर्धारित शब्द-सीमा में उत्तर गाँव में रात होते ही घोर सन्नाटा छा जाता था। अँधेरे में सियारों का क्रंदन और उल्लुओं की डरावनी आवाजें निस्तब्धता को भयानक बनाती थीं। झोंपड़ियों से रोगियों की कराह, कै-दस्त की आवाजें, बच्चों की माँ-माँ पुकार और प्रियजनों का दबा हुआ रुदन सुनाई पड़ता था। महामारी, असहायता और मृत्यु की आशंका से रात का आतंक बढ़ जाता था।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त उत्तर पाठ के प्रसंग और प्रश्न के अपेक्षित बिंदुओं को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: वर्णन में सन्नाटे के साथ उसे भंग करने वाली कराह और पुकार जैसी ध्वनियाँ भी अवश्य लिखें।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

शिरीष के फूलों की कोमलता को देखकर कवियों की क्या धारणा रही है ? लेखक ने इसका विरोध करते हुए क्या कहा है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फूलों की कोमलता और पूरे वृक्ष की कठोरता का अंतर
- पाठ के प्रसंग के आधार पर कारण और परिणाम को जोड़कर संक्षिप्त उत्तर देना।

चरण 1: कवियों की धारणा स्पष्ट करना कवियों ने शिरीष के फूलों की अत्यंत कोमल बनावट को देखकर उसे कोमलता का आदर्श माना है। उनकी दृष्टि मुख्यतः फूलों पर रही, इसलिए शिरीष के वर्णन में उसके मृदु और नाजुक स्वरूप को प्रमुखता मिली।

चरण 2: लेखक के प्रतिवाद का आधार लेखक इस एकांगी दृष्टि से असहमत हैं। शिरीष के फूल जितने कोमल होते हैं, उसके फल उतने ही कठोर होते हैं। पुराने फल तब तक डटे रहते हैं, जब तक नए पत्ते और फल उन्हें धक्का देकर बाहर नहीं कर देते। इसलिए पूरे वृक्ष को केवल कोमलता का प्रतीक मानना उचित नहीं है। यह तुलना शिरीष के स्वभाव का अधिक पूरा चित्र प्रस्तुत करती है। लेखक फूलों की वास्तविक कोमलता से इनकार नहीं करते; उनकी आपत्ति का विषय केवल फूलों को देखकर पूरे वृक्ष के विषय में निर्णय देना है। फल का उदाहरण इस अधूरे मूल्यांकन को सुधारता है।

चरण 3: निर्धारित शब्द-सीमा में उत्तर शिरीष के कोमल फूल देखकर कवियों ने उसे कोमलता का आदर्श माना है। लेखक इसका विरोध करते हुए कहते हैं कि कवियों को फूलों के साथ उसके कठोर फल भी देखने चाहिए थे। उसके पुराने फल नए पत्ते और फल आने पर ही हटते हैं। इस प्रकार शिरीष में कोमलता के साथ कठोरता भी है; कवियों की धारणा एकांगी है।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त उत्तर पाठ के प्रसंग और प्रश्न के अपेक्षित बिंदुओं को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में फूलों की कोमलता और फलों की कठोरता का स्पष्ट विरोध दिखाएँ।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए कि आर्थिक पहलू की दृष्टि से भी जाति प्रथा हानिकारक प्रथा क्यों है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जन्माधारित व्यवसाय के आर्थिक दुष्परिणाम
- पाठ के प्रसंग के आधार पर कारण और परिणाम को जोड़कर संक्षिप्त उत्तर देना।

चरण 1: व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता का महत्व आर्थिक जीवन में व्यक्ति की रुचि और योग्यता के अनुरूप काम तथा बदलती परिस्थितियों के अनुसार व्यवसाय बदलने की सुविधा आवश्यक है। जाति-प्रथा जन्म के आधार पर पेशा निर्धारित करके इन दोनों संभावनाओं को रोकती है।

चरण 2: आर्थिक हानि को कारण से जोड़ना पैतृक पेशे में काम न मिलने पर भी दूसरा व्यवसाय अपनाने की सामाजिक स्वतंत्रता नहीं रहती। इससे बेरोजगारी बढ़ती है। अरुचिकर कार्य करने की विवशता काम के प्रति उदासीनता पैदा करती है, जिससे कार्यकुशलता और उत्पादन प्रभावित होते हैं।

चरण 3: निर्धारित शब्द-सीमा में उत्तर जाति-प्रथा जन्म के आधार पर पेशा निर्धारित करती है और रुचि तथा क्षमता के अनुसार व्यवसाय चुनने या बदलने से रोकती है। पैतृक पेशे में काम न मिलने पर बेरोजगारी बढ़ती है। अरुचिकर काम से कार्यकुशलता घटती है, इसलिए यह आर्थिक दृष्टि से हानिकारक है।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त उत्तर पाठ के प्रसंग और प्रश्न के अपेक्षित बिंदुओं को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: आर्थिक हानि बताते समय पेशा बदलने पर रोक को बेरोजगारी और घटती कार्यकुशलता से जोड़ें।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए कि 'बाज़ार को शैतान का जाल' क्यों कहा गया है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार के आकर्षण और अनियंत्रित इच्छाओं का संबंध
- पाठ के प्रसंग के आधार पर कारण और परिणाम को जोड़कर संक्षिप्त उत्तर देना।

चरण 1: बाज़ार के सम्मोहन को समझना बाज़ार की सजी हुई वस्तुएँ मनुष्य के भीतर अभाव का अनुभव जगाती हैं। अपनी वास्तविक आवश्यकता को स्पष्ट न रखने वाला व्यक्ति हर आकर्षक वस्तु पाने की इच्छा करने लगता है। इस प्रकार इच्छा पर विवेक का नियंत्रण घट जाता है।

चरण 2: जाल की उपमा का आशय बाज़ार का आकर्षण ऐसी खरीदारी करवा देता है जिसकी आवश्यकता नहीं थी। व्यक्ति धन खर्च करके भी संतोष नहीं पाता, क्योंकि एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा पैदा होती रहती है। इसी प्रलोभन और असंतोष के चक्र के कारण बाज़ार को शैतान का जाल कहा गया है।

चरण 3: निर्धारित शब्द-सीमा में उत्तर बाज़ार अपनी चमक-दमक से अनावश्यक वस्तुओं का आकर्षण पैदा करता है। व्यक्ति अपनी जरूरत भूलकर अधिक खरीदने के प्रलोभन में फँसता है। इच्छाएँ बढ़ती जाती हैं और धन खर्च करने पर भी संतोष नहीं मिलता। इस मोहजाल के कारण उसे शैतान का जाल कहा गया है।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त उत्तर पाठ के प्रसंग और प्रश्न के अपेक्षित बिंदुओं को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: शैतान के जाल का अर्थ समझाते हुए आकर्षण, अनावश्यक खरीद और असंतोष की कड़ी लिखें।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

महादेवी वर्मा के घर आने वाले साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मापदंड था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मीयता पर आधारित सम्मान का मापदंड
- पाठ के प्रसंग के आधार पर कारण और परिणाम को जोड़कर संक्षिप्त उत्तर देना।

चरण 1: भक्तिन की दृष्टि को समझना भक्तिन साहित्यकारों की प्रसिद्धि या साहित्यिक उपलब्धियों को सम्मान का मुख्य आधार नहीं बनाती थी। उसके लिए लेखिका का जीवन और उनसे जुड़ा अपनापन अधिक महत्वपूर्ण था। अतिथि का मूल्यांकन भी वह इसी व्यक्तिगत आत्मीयता से करती थी।

चरण 2: सम्मान के वास्तविक आधार को स्पष्ट करना महादेवी वर्मा के प्रति किसी साहित्यकार का स्नेह तथा लेखिका की उसके प्रति आत्मीयता भक्तिन के व्यवहार को प्रभावित करते थे। लेखिका के निकट और उनसे स्नेह रखने वाले व्यक्तियों को वह अधिक आदर देती थी। इस प्रकार उसका मापदंड साहित्यिक प्रतिष्ठा की अपेक्षा लेखिका से संबंध था।

चरण 3: निर्धारित शब्द-सीमा में उत्तर भक्तिन के लिए साहित्यकारों के सम्मान का मापदंड उनकी साहित्यिक प्रसिद्धि नहीं, महादेवी वर्मा के प्रति उनका स्नेह और आत्मीय संबंध था। जो लेखिका के प्रति जितना अपनापन रखता था, भक्तिन उसका उतना ही अधिक सम्मान और सत्कार करती थी।

चरण 4: निष्कर्ष उपर्युक्त उत्तर पाठ के प्रसंग और प्रश्न के अपेक्षित बिंदुओं को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: भक्तिन के सम्मान का आधार बताते समय साहित्यिक यश के बजाय लेखिका से आत्मीय संबंध पर ध्यान दें।